मानस शब्द-कोश

▭ सूर्यभान सिंह

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

मानस शब्द-कोश

(मानस शब्द-कोश का अपूर्व संग्रह)

लेखक
सूर्यभान सिंह
एम० ए० एल० टी०
प्रधानाचार्य
मोतीलाल नेहरु इण्टर कालेज
जमुनीपुर, इलाहाबाद

उमेश प्रकाशन
१००, लूकरगंज, इलाहाबाद

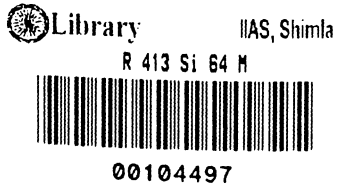

Library IIAS, Shimla
R 413 Si 64 M
00104497

R
413
Si 64 M

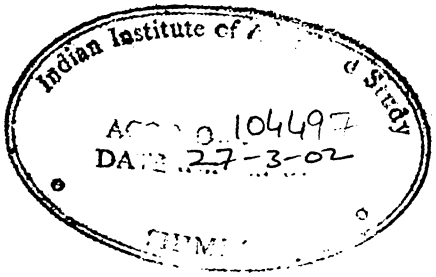

Indian Institute of A... Study
ACC. No. 104497
DATE 27-3-02
SHIMLA

प्रकाशक : उमेश प्रकाशन, 100 लूकरगंज, इलाहाबाद–1
संस्करण : प्रथम 1996 © लेखक
मुद्रक : ग्राफिक्स, इलाहाबाद
लेजर कम्पोजिंग : कम्प्यूटर प्वांइट, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद–1

दो शब्द

सुधी सज्जनों एवं पाठकों, इस लघुतम 'मानस–शब्द–कोश' को मुझसे मेरे मित्रों एवं छात्रों ने हठात् लिखवाया। आत्मीयजनों का आग्रह अपरिहार्य होता है। इस कोश का मैं मात्र संचयनक हूँ। इसमें मैं मौलिकता का कुछ भी दावा नहीं करता। मैने अपने छात्र–जीवन में मानस के लगभग सभी शब्दों को लिख कर, उनका अर्थ याद कर लिया था। सौभाग्य से मुझे एम० ए० तक हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने का सुअवसर भी प्राप्त हो गया। अपनी अध्ययन–अवधि में मैने अनुभव किया कि समूचे हिन्दी–साहित्य के 75 प्रतिशत शब्द 'राम चरित–मानस' में सुलभ हो गए। अस्तु, सोचा कि यदि छात्र एवं अन्य हिन्दी–साहित्य प्रेमी इस कोश के शब्दार्थ को कण्ठस्थ कर लेंगे, तो उनके पास शाब्दिक–अकिंचनता नहीं रहेगी। 'मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः'–इस संस्कृत की सूक्ति का मैं पक्षधर नहीं हूँ, यद्यपि यह सूक्ति भी अपनी जगह सार्थक है।

इस 'मानस–कोश' के प्रेरक सुहृज्जनों में मेरे स्व० भाई श्री रामवली सिंह, पं० रामशिरोमणि मिश्र, श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, पं० उमाशंकर त्रिपाठी, श्री तरुण राज सिंह (प्राध्यापक), मेरे दोनों पुत्र (श्री शीतलेन्द्र सिंह तथा श्री मार्तण्ड सिंह) तथा अन्य मेरे विद्यालय के सभी अध्यापक–गण, एवं भूत तथा वर्तमान के मेरे सभी छात्र–वृन्द उल्लेख्य हैं'।

अन्त में, इतना ही कहना चाहता हूँ यदि मेरे उस शब्द–कोश से छात्रों तथा अन्य हिन्दी–साहित्य के अध्येताओं का कुछ भी हित हो सका, तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा।

नमस्कारान्ते
सूर्यभान सिंह
बसन्त–पंचमी
25–1–96

शब्द	अर्थ

(अ)

अकथ	जिसका किसी प्रकार वर्णन न किया जा सके। अवर्णनीय।
अकथनीय	जो कहा न जा सके। अवर्णनीय
अकनि	सुनकर
अकल	अंग–रहित, निराकार
अकसर	अंकेला, एकाकी। (अक्सर आयउ तात। लं०)
अकाम	इच्छा–रहित।
अकाल	असमय
अकंटक	निष्कंटक, विघ्न–रहित।
अकिंचन	जिसके पास कुछ न हो। निर्धन। दरिद्र
अकूपार	असीम, समुद्र।
अक्षय	जिसका नाश न हो।
अखण्ड	जो टूटे न। खण्ड–रहित। पूरा। समूचा
अखिल	सम्पूर्ण, सब।
अग	जो चल न सके, पर्वत, वृक्ष।
अगणित	असंख्य, जो गिना न जा सके।
अगम	जहां जा न सके, अथाह।
अगरू	एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ या लकड़ी।
अघटित	जो हुआ न हो।
अघात	(आघात), चोट।
अघाती	तृप्त नहीं होती।
अचगरी	शरारती, नटखटी।
अचल	पर्वत, जो चल न सके।
अचला	पृथ्वी, न चलने वाली।
अचंचल	शान्त।
अक्षत	जो नष्ट न हुआ हो।
अछत	होते हुए, उपस्थित {आयु अछत जुवराज पद, समहि देहि नरेश। (अयो०)}
अज	जन्म–रहित, ब्रह्मा, शिव। बकरा।
अजा	बकरी
अजर	बुढ़ापा–रहित।
अजामिल	एक पापी ब्राह्मण, जिसने मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेकर बैकुण्ठ प्राप्त किया।
अजिन	मृगचर्म, मृगछाला।

शब्द	अर्थ
अजिर	आंगन।
अज्ञ	मूर्ख।
अज्ञता	मूर्खता।
अटन	घूमना।
अट्टहास	खूब जोर से हँसना।
अणु	सूक्ष्म, कण।
अतनु	कामदेव, बिना शरीर वाला।
अतिशय	विशेष, अधिक।
अतीत	बीता हुआ, समाप्त।
अतुलित	जिसकी तुलना न की जा सकी।
अत्र	यहाँ, इसमें
अत्रिप्रिया	अनसूया, यह अत्रि ऋषि की पत्नी थी।
अथायी	बैठक, सभा। संस्कृत में 'आस्थान' शब्द है।
अदभ्र	बहुत, अधिक।
अदिति	दक्ष प्रजापति की कन्या। सूर्य को 'आदित्य' कहते हैं, क्योंकि वे अदिति के पुत्र माने जाते हैं।
अदेय	न देने योग्य।
अदृश्य	जो दिखाई न दे। छिपा हुआ।
अद्भुत	विचित्र।
अद्रि	पहाड़।
अद्वैत	जिसके समान दूसरा न हो। अँकेला। बेजोड़।
अध	नीचे।
अधर	नीचे का ओष्ठ। ओष्ठ।
अधिप	राजा।
अधिवास	ठहरने का स्थान।
अधीश	स्वामी, मालिक।
अनइस	खराब, बुरा।
अनख	अप्रसन्नता, कुढ़न।
अनघ	पाप–रहित।
अनपायिनी	नित्य, सदा रहने वाली। अटल। अक्षय।
अनन्य	जो दूसरे के आश्रय में न जाए। जिसके समान दूसरा न हो।
अनल	अग्नि।
अनवद्य	दोष–रहित। निर्दोष।

शब्द	अर्थ
अनामय	रोग–रहित।
अनिल	हवा, वायु।
अनिर्वाचय	जो कहा न जा सके।
अनी	सेना।
अनीक	सेना।
अनिप	सेनापति।
अनीश	स्वामी–रहित।
अनुकथन	बार–बार कहना।
अनुकम्पा	दया, कृपा।
अनुग्रह	दया।
अनुचर	सेवक।
अनुग	दास।
अनुचरी	दासी।
अनुज	छोटा भाई।
अनुजा	छोटी बहिन।
अनुदिन	दिन प्रतिदिन।
अनुमोदन	प्रसन्नता पूर्वक, समर्थन।
अनुराग	प्रेम।
अनुरूप	सदृश, समान।
अनुशासन	आज्ञा।
अनुरोध	रोक, प्रतिरोध।
अनुसंधान	खोज।
अनुसारी	पीछे–पीछे चलने वाला।
अनुहार	समान।
अनृत	झूठ, असत्य।
अनैसे	कुदृष्टि से।
अनंग	कामदेव, देह–रहित, अंग–रहित।
अन्यथा	दूसरी जगह।
अन्वह	निरन्तर।
अपकार	बुराई, निरादर।
अपडर	झूठा डर, अपने से कल्पित भय।
अपत	अप्रतिष्ठा।
अपर	दूसरा।
अपलोक	अपयश, लोक की मर्यादा से हटा हुआ।

शब्द	अर्थ
अपवर्ग	मोक्ष।
अपवाद	अपयश, कलंक, अपकथन, प्रतिनियम।
अपहरण	चुराना।
अपहारी	चुराने वाला।
अपान	गुदा की वायु।
अपि	भी।
अपेल	जो टाली न जा सके।
अप्रतिहत	बिना रोक।
अबला	स्त्री।
अबद्ध	न मारने योग्य।
अबुध	मूर्ख, निबुर्द्धि।
अभिजित	एक नक्षत्र का नाम।
अभिनन्दन	१– सेवा, २– स्वागत, ३– प्रशंसा।
अभिमत	इच्छित।
अभिष्ट	इच्छित।
अभिषेक	स्नान, तिलक, राज्याभिषेक।
अमर	देवता, जो कभी मरे न।
अमराई	आम की बाग।
अमित	बहुत, अधिक।
अमिय	अमृत।
अय	लोहा।
अयन	घर।
अरगाई	चुप, शान्त।
अर्णव	समुद्र।
अरनी	अग्नि–मंथन की लकड़ी।
अरि	शत्रु।
अरुण	लाल।
अरुण शिखा	मुर्गा, मुर्गे की चोटी लाल होती है।
अलक	बालों की लट।
अलच्छि	दरिद्र, निर्धन।
अलान	जंजीर।
अलि	भौंरा।
अलिनी	१– भ्रमरी २– सखियाँ।
अलीक	असत्य।

शब्द	अर्थ
अलीहा	झूठा।
अवकलित	निश्चित।
अवगति	ज्ञान।
अवगाह	अथाह, स्नान।
अवज्ञा	अपमान।
अवढर	नीच पर भी दया करने वाला।
अवरेखी	लिखी।
अवतेस	सिर का आभूषण।
अवनि	पृथ्वी।
अवनिप	राजा।
अवराधक	सेवक।
अवरेव	तिरछा, जटिल, कठिन।
अवसेरी	विलेब, देवी।
अविगत	चराचर मे व्याप्त।
अविवेक	ज्ञान–रहित, अज्ञान।
अव्यक्त	जो प्रकट न हो, गुप्त, अप्रगट, ईश्वर।
अव्याहत	न रोकने योग्य, जो न रोका जा सके।
अष्टादश	अठारह।
अशन	आहार, भोजन।
अनशन	निराहार, बिना भोजन।
अशनि	वज्र।
अशिव	अमंगल, कल्याण–रहित।
अशेष	शेष–रहित, सम्पूर्ण
असमय	कुसमय, अकाल।
असमसर	स्मर सर–कामदेव के वाण।
असमंजस	दुविधा।
असाधी	असाध्य, जिसके दूर होने की आशा न हो।
असि	तलवार, कृपाण
असित	श्याम, काला।
सित	सफेद, उज्जवल।
असुर	दैत्य।
अशौच	अशुद्धि।
अस्थिमात्र	केवल हाड़।
असम्भावना	अनिश्चय।

शब्द	अर्थ
असुरसेन	राक्षसों की सेना, एक राक्षस का नाम गया में जिसकी पीठ पर श्राद्ध किया जाता है।
असम्मत	प्रतिकूल।
अह	दिन।
अहर्निशि	रातों दिन।
अहोरात्रि	दिन रात्रि।
अहमिति	अहंकार, घमण्ड।
अहह	अत्यन्त दुःख में प्रयोग करने का शब्द।
अहि	सर्प।
अहिनी	सर्पिणी, नागिन।
अहिराज	नागराज।
अहिवात	सौभग्य, सुहाग।
अहेर	शिकार।
अहेरी	शिकारी।
अहो	आश्चर्य सूचक शब्द।
अहँ	अहंकार घमण्ड।
अंक	अक्षर, गिनती, गोदी, क्रीड़ा।
अंकित	चिन्हित, लिखा हुआ।
अंग	शरीर का भाग।
अंगरी	कवच, बख्तर।
अँचल	ओचल।
अम्ब	माता।
अम्बक	नेत्र, आँख।
अम्बर	आकाश, वस्त्र।
अम्बरीष	विष्णुभक्त एक राजा का नाम, जिसे दुर्वाषा जी शाप देना चाहे, इतने में ही विष्णु भगवान का चक्र सुदर्शन उन्हें खदेड़ लिया। तीनों लोकों में घूमने के बाद अन्त में दुर्वाषा जी राजा अम्बरीष के ही शरणागत हुए तब चक्र वापस चला गया।
अम्बु	जल, पानी।
अम्बुज	कमल।
अम्बुद	बादल।
अम्बुधि	समुद्र।
अम्बुधर	जलधर, बादल।

शब्द	अर्थ
अम्बुपति	वरूण, जल के स्वामी।
अम्भोज	कमल।
अंजि	अंजन लगाकर।
अंगुलि	उँगुली।
अंजलिगत	अंजलि या हथेली में आया हुआ या गया हुआ।
अण्ड	अण्डा या ब्रह्माण्ड।
अण्डकटाह	ब्रह्माण्ड।
अन्तर	बीच, फर्क, भेद
अन्तरयामी	हृदय की बात जानने वाला।
अन्तरर्धान	गुप्त, छिपा हुआ, छिप जाना।
अंतावरि	आंत, पेट के भीतर की आंत।
अंख	ओवा या भट्ठा।

(आ)

आकर	खानि, खान, जहाँ धातुएँ, रत्नादि खोदने से प्राप्त होते हैं।
आकुल	व्याकुल, पूर्ण।
आखर	अक्षर।
आगर	चतुर, निपुण, प्रवीण।
आगरी	चतुर, प्रवीणा, कुशला।
आगर	घर, खान, स्थान।
आगिल	अगली, आगे की।
आचरण	कर्त्तव्य, करतूति, चरित्र।
आचरणी	कर्त्तव्य, करतूति, चरित्र।
आतप	धूप, घाम।
आत्महत	आत्म–हत्यारा, अपना हनन करने वाला।
आतुर	उतावला, शीघ्रता से, रोगी।
आदि कवि	प्रथम कवि, वाल्मीकि।
आदेश	आज्ञा।
आन	शपथ, सौगन्ध।
आनन	मुख, मुँह।
आपन्न	पड़ा हुआ, युक्त, सहित, पूर्ण।
आभीर	अहीर,ग्वाला, गोप।
आमलक	आँवला।
आयुध	शस्त्र, हथियार।

शब्द	अर्थ
कुसुमायुध	पुष्पायुध, कामदेव। कामदेव के वाण फूलों के हैं, अतः उसे कुसुमायुध कहते हैं।
वज्रायुध	इन्द्र। इन्द्र का अस्त्र वज्र है।
चक्रायुध	विष्णु भगवान, विष्णु का अस्त्र चक्र है।
आरज	आर्य, श्रेष्ठ, बड़े लोग।
आरजसुत	(आर्यपुत्र), पति।
आरत	आर्त्त, दुःखी, पीड़ित।
आरति	आर्त्ति, दुःख, पीड़ा। दीनता।
आराति	बैरी, शत्रु।
आराधन	पूजा, सेवा।
आराधना	पूजा, सेवा।
आराध्य	जिसकी आराधना की जाय, पूज्य।
आराधक	पूजा करने वाला, आराधना करने वाला।
आराम	१– सुख, विश्राम। २– बाग, बगीचा, उपवन।
आरूढ़	चढ़ा हुआ।
रथारूढ़	रथ पर चढ़ हुआ।
अश्वारूढ़	घोड़े पर चढ़ा हुआ।
पर्वतारूढ़	पर्वत पर चढ़ा हुआ।
सिंहासनास्ढ़	सिंहासन पर चढ़ा हुआ।
वृक्षारूढ़	पेड़ पर चढ़ा हुआ।
आरोप	लगाना, रोपना, कल्पना।
दोषारोप	दोष लगाना
आरोपण	लगाना, चढ़ाना।
दोषारोपण	दोष लगाना।
आर्त्त	दुःखी, पीड़ित।
आलय	घर
उरालय	हृदय में रहने वाला।
आलवाल	थाल्हा, कियारी।
आवर्त्त	भँवर, घेरा, चक्कर।
आवलि	अवलि, पंक्ति।
आवाहन	बुलाना, मंत्रादि से देवताओं को बुलाना।
आश्रित	आश्रय लिए हुए, सहारा लिए हुए।
आश्रमी	चारों आश्रम में रहने वाला।

शब्द	अर्थ
आसक्त	माहित, लीन, लिप्त, संलग्न।
आसावसन	दिगम्बर, दिशाएँ में ही जिसका वस्त्र हों अर्थात् नग्न।
आशा	दिशा। उम्मीद।
आसीन	बैठा हुआ।
आशु	शीघ्र, जल्दी।
आक	अंक, अक्षर, गिनती।
ओकुरे	अंकुर या अंखुआ निकले हुए।

(इ)

इच्छित	इच्छा किया हुआ, चाहा हुआ।
इदमित्थम्	यह, इतना ही, ऐसे ही।
इन्दिरा	लक्ष्मी।
इन्दु	चन्द्रमा।
इन्द्रजाल	बाजीगरी, जादूगरी।
इन्द्रजीत	मेघनाद, रावण का पुत्र। मेघनाद ने तप के बल से इन्द्र को जीत लिया था। इसीलिए उसे 'इन्द्रजीत' कहते हैं।

(ई)

ई	लक्ष्मी।
ईशान	ईश्वर, उत्तर और पूर्व दिशा का कोण।
ईषना	एषणा, इच्छा, लालसा।
ईश	ईश्वर, शिव जी, स्वामी।

(उ)

उ	शिव
उकठि	सूखा हुआ जेड़ या काष्ठ।
उकसहिं	ऊपर की ओर उठना, इधर–उधर होना।
उड़ा	तीव्र, भयंकर।
उघरे	खुल जाने पर।
उचाटु	चित्त का व्याकुल होना।
उछेग	गोदी, क्रोड़ा, कोरा।
उड	तारा, नक्षत्र।
उक्ति	कथन, वचन।
उत्कण्ठा	तीव्र लालसा, प्रबल इच्छा।
उत्कर्ष	वृद्धि, उन्नति, उत्थान।
उत्पात	उपद्रव।

शब्द	अर्थ
उत्सव	उल्लास, प्रसन्नता का दिन।
उत्तंग	ऊँचा।
उदक	जल।
उद्घाटी	खेली, प्रकट किया। खोला।
उदधि	समुद्र
उद्भव	उत्पत्ति, जन्म।
उदयगिरि	उदयाचल। पूर्व दिशा में स्थित वह पर्वत, जिस पर सूर्य उदय होते हैं।
उदर	पेट।
उद्वेग	भय, घबड़ाहट, व्याकुलता।
उदास	आशा–रहित, दुःखी।
उदासी	संसार से विमुख रहने वाले साधु। निराश।
उदासीन	शत्रुभाव एवं मित्रभाव रहित, तटस्थ।
उपनिषद्	ज्ञान काण्ड के ग्रंथ।
उपपातक	छोटा पाप।
उपवन	विहार करने की वाटिका।
उपरागा	ग्रहण, यंत्रणा, दुःख, दण्ड।
उपल	पत्थर।
उपवरहन	तकिया।
उपराजा	उत्पन्न किया।
उपवासा	व्रत करना, भूखा रहना।
उपहार	भेंट, सौगात।
उपाटी	उखाड़लिया।
उपाधि	उपनाम, पदवी, उपद्रव।
उपासक	उपासना करने वाला, भक्त।
उपासना	पूजा, भक्ति।
उभय	दो, दोनों।
उमा	पार्वती जी।
उरग	सर्प। सांप।
उर्विजा	पृथ्वी की पुत्री, सीता जी।
उलूक	उल्लू।
ऊना	कमी, न्यूनता, खेद।

(ऋ)

ऋक्षराज	रीछों के राजा, जामवन्त।

शब्द	अर्थ
ऋक्षेशा	ऋक्षराज, जामवन्त।
ऋषिनायक	ऋषियों में श्रेष्ठ या बड़े।
	(ए)
एतादृश	ऐसा।
एवमस्तु	ऐसा ही हो।
एरण्ड	रेड़।
	(ऐ)
ऐ	शिव
ऐक	अटकल, अनुमान।
	(ओ)
ओघ	समूह
ओड़िअहिं	आड़ना, रोकना। धारण करना।
ओदन	भात। चावल का भात।
ओधे	धँसा, गड़ गया।
ओर	अन्त, छोर।
ओरे	ओले, पत्थर।
	(क)
क	ब्रह्म, विष्णु, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, जल।
कइकई	कैकेयी।
कच	बाल, केश।
कच्छप	कछुआ।
कज्जल गिरि	काला पहाड़।
कटक	सेना, दल।
कटाह	कड़ाहा।
कटि	कमर।
कटिसूत्र	करधनी, मेखला।
कटु	कड़ुवा।
कड़िहारु	कर्णधार, मल्लाह, धीवर।
कत	क्यों।
कति	कितना।
कथनीय	कहने योग्य।
कदली	केला।
कदम्ब	कदम का फूल या वृक्ष। समूह।

शब्द	अर्थ
कद्रू	नागों की माता। कश्यप मुनि की स्त्री।
कनककशिपु	हिरण्यकशिपु, प्रहलाद के पिता।
कनकलोचन	हिरण्याक्ष दैत्य। हिरण्यकशिपु का भाई।
कनी	कणिका, टुकड़ा, छोटा अंश।
कपटभूमि	माया भूमि।
कपाट	किवाड़।
कपाल	खोपड़ी, सिर, मुण्ड।
कपासू	कपास। इसमें रूई निकलती है।
कपि	बन्दर।
कपिकुञ्जर	बन्दरों में बड़ा।
कवि–कुञ्जर	कवियों में बड़ा।
नर–कुञ्जर	मनुष्यों में बड़ा या श्रेष्ठ।
मुनि–कुञ्जर	मुनियों में श्रेष्ठ।
कपिन्दा	कपीन्द्र, बन्दरों का सरदार अर्थात् सुग्रीव।
कपिल	पीला रंग। सांख्य–दर्शन के रचयिता मुनि का नाम।
कपोत	कबूतर
कपोल	गाल।
कबांरु	गुसा, हुनर, विद्या।
कमठ	कच्छप, कछुआ।
कमनीय	सुन्दर।
कमला	लक्ष्मी जी।
कर	१– हांथ, २– सूंड, ३– महसूल या टैक्स, ४– किरण, ५– करने वाला। उदाहरण– १– दुहु कर कमल सुधारत बाना। २– करिकर सरिस सुभग भुजदण्डा। ३– तुम सन कर मांगत दशशीसा। ४– रविकर निकर निहारि।
करक	दर्द, कसक, टीस।
करज	अंगुली, हाय से उत्पन्न होने वाली।
करतरी	हंथेली।
करतल	हंथेली पर।
करन	करना, कारण, कर्ण या कान।
करनीया	करने योग्य।
करवर	विपत्ति, दुःख। उदा० 'ईश अनेक करवरेठारी' (बाल०)

शब्द	अर्थ
कर्षा	कर्ष, ईर्ष्या, बैर।
करषि	खींचकर।
करारा	कराल, भयंकर। कठोर।
करि	हांथी, करके।
करिनी	हंथिनी।
करीला	करील का वृक्ष, इसमें कांटे होते हैं और कडुवा फल होता है।
कर्णधार	मल्लाह।
कल	सुन्दर, मधुर, सुख।
कलकण्ठ	कोयल। मीठी बोली बोलने वाली।
कलप	कल्प, ब्रह्मा का एक दिन, रचना। विचार।
कल्पतरु	कल्पवृक्ष।
कल्पना	तर्क, विचार, रचना। दुःखी होना।
कलपि	दुःखी होकर।
कल्पित	मिथ्या, बनाया गया, कल्पना किया हुआ।
कलभ	हांथी या ऊँट का बच्चा।
कलमले	कुलबुलाये। खसमसाने। हिल डुल गए।
कलश	घड़ा।
कलहंस	राजहंस।
कला	चन्द्रमा का सोलहवां अंश। विद्या ,की ६४ कला। गुण, विद्या।
कलाप	समूह।
कलि	कलियुग।
कलिकवि	कलयुग के कवि।
कलित	पहिरा हुआ, युक्त, सुन्दर।
कलिमल सरि	कर्मनााशा नदी।
कलिल	पंक, कीचड़।
कलुष	पाप।
कलेवर	शरीर।
क्लेश	दुःख।
कलंक	अपयश।
कल्लोलिनी	तरंगवाली, नदी।
कवल	ग्रास, कौर, किसी खाद्य–पदार्थ का वह टुकड़ा जो मुख में एक बार डाला जाय।

शब्द	अर्थ
कलित्त	एक छन्द का नाम।
कबन्ध	एक दैत्य का नाम, सिर–रहित शरीर। धड़।
कश्यप	एक ऋषि का नाम।
कसे	परखा, कसौटी पर परखना। कसकर बांधना।
कहानी	कथा।
काऊ	कबहूँ।
काक	कौवा।
काकपक्ष	सिर के पट्टे। बगल के बाल।
काकु	व्यंग्योक्ति, व्यंग्य–वचन।
काखासोती	दोनों कंधो से कमर तक कपड़े को बांधना।
कांछे	पहने।
कानन	वन, दोनों कान। कानों।
कानी	कानि, संकोच, लज्जा, मर्यादा।
काम	कामना, इच्छा, कामदेव।
कामद	मनोरथ को देने वाला।
कामरूप	इच्छानुसार रूप धारण करने वाला।
कार्मुक	धनुष।
कारक	करने वाला। व्याकरण में कुल सात कारक होते हैं।
कारणकरण	कारण के करने वाले, ईश्वर।
कारी	काली।
काल	समय, मृत्यु।
कालकूट	महाविष।
कालरात्रि	प्रलय की रात्रि।
कालिका	काली देवी। दुर्गा जी।
कांजी	खट्टा पदार्थ, अम्ल चीज।
कांधी	केधे पर धारण किया।
किन्नर	देवजाति।
किमपि	कुछ भी।
किंवा	अथवा, या।
किरातिन	भीलनी। भील की स्त्री।
किरिच	टुकड़ा, खंड, भाग।
किरीट	मुकुट।
किलकिला	बानरों का एक प्रकार का शब्द। जोर लगाना।
किशलय	कोमल पत्ते। नए पत्ते।

शब्द	अर्थ
किशोर	सोलह वर्ष की आयु वाला बालक।
किंकर	सेवक, दास, भक्त।
किंकरी	दासी, सेविका।
किंकिणी	करधनी, मेखला।
किंशुक	टेसू। पलाश।
कीट	कीड़ा।
कीर्ति	यश।
कीर	तोता, सुग्गा।
कील	खीला।
कीश	वानर।
कुकाठु	बुरा काठ।
कुचाह	अनचाही बात, बुरा समाचार।
कुठारी	कुल्हाड़ी।
कुठाहर	बुरा स्थान।
कुदृष्टि	बुरी निगाह, पाप दृष्टि।
कुधातु	बुरी धातु, लोहा।
कुपथ	कुमार्ग, बुरा रास्ता।
कुपथ्य	अहितकर भोजन, बुरा भोजन।
कुवलय	कमल।
कुविहंग	बुरा पक्षी।
कुमार	क्वारा, अविवाहित बालक।
कुमारी	बिना ब्याही कन्या।
कुमुद	कोका बेली, कुमुदिनी, चन्द्रमा को देखकर रात्रि में खिलने वाला फूल विशेष। एक बन्दर का नाम।
कुमुदबन्धु	चन्द्रमा।
कुररी	जलाशय पर रहने वाली एक चिड़िया।
कुरुचि	बुरी वासना।
कुरंग	बुरा रंग। हरिण, मृग।
कुल	वंश, समूह।
कुलह	टोपी। कुलही। शिरस्त्राण।
कुलिश	वज्र। हीरा।
कुशली	सुखी।
कुशकेतु	राजा जनक के भाई का नाम।
कुसमय	विपत्ति काल में।

Indian Institute ... ACC NO. 10497

शब्द	अर्थ
कुसुमित	फूला हुआ।
कुम्हड़	कुम्हड़ा, कोंहड़ा, सीताफल।
कुंकुम	केसर, सुगंधित पदार्थ। उदा० 'मृगमद सुन्दर कुंकुम सींचा।' (बालकाण्ड)
कुंचित	घुघुराले।
कुंजर	हांथी।
कुन्द	चमेली, सफेद फूल।
कुम्भ	घड़ा, हांथी का मस्तक।
कुम्भकर्ण	रावण के भाई का नाम। घड़े के समान कानों वाला।
कूजहिं	गुंजार करते हैं।
कूट	पहाड़ की चोटी। हंसी, श्लेष युक्त कविता।
कूटी	व्यंग्य वचन कहने वाला।
कूप	कुंआ।
क्रूर	निर्दयी, कपटी, मूर्ख।
कूल	किनारा, तट।
कृत	किया हुआ, करतूति, कार्य।
कृतकृत्य	पूर्ण काम, कृत कार्य, सफल।
कृतान्त	यमराज।
कृतनिन्दक	किए हुए की निन्दा करने वाला।
कृतज्ञ	उपकार को जानने वाला।
कृपाण	तलवार।
कृमि	कीड़ा, कीट।
कृश	दुर्बल, दुबला, पतला, कमजोर।
कृषी	खेती।
केकी	मोर।
केतु	१– ध्वजा, २– राहु का भाई।
केलि	खिलवाड़, क्रीड़ा।
केवट	मल्लाह, निषाद।
केसरी	हनुमान जी के पिता, केसर का रंग, सिंह।
केहरी	सिंह।
कैकय	कैकय देश, कश्मीर।
कैटभ	एक दैत्य का नाम। मधु दैत्य का भाई।
कैरव	कुमुद, कोकाबेली, सफेद कमल जो चन्द्रमा को देखकर रात में खिलता है।

शब्द	अर्थ
कैवल्य	मुक्ति।
कोक	चकवा पक्षी।
कोकी	चकवी पक्षी, चकई।
कोका	चकवा चकई। उदा० 'निशिदिन नहिं अवलोकहिं कोका।' (बालकाण्ड)
कोट	१– किला, २– करोड़।
कोकनद	लाल कमल।
कोटर	वृक्ष का खैड़र, खोखला।
कोटि	करोड़, सौलाख।
कोपि	कोई भी।
कोपी (कोऽपि)	कोई भी, क्रोधी।
कोविद	पण्डित, विद्वान्।
कोये	आंख का कोना।
कोरि	खुरचकर, खरौंचकर।
कोरी	१– करोड़, २– एक जाति।
कोल	शूकर, सूअर।
कोलाहल	शोरगुल, चिल्लाहट।
कोष	१– खजाना, २– कमल का मध्य।
कोशल	एक देश का नाम।
कोशला	अयोध्यापुरी।
कोशलापुरी	अयोध्यापुरी।
कोह	क्रोध।
कोहवर	कौतुक–गृह। वह स्थान जहाँ विवाह में स्त्रियां वर को ले जाकर मनोरंजक रहस्यात्मक बातें करती है। यहाँ वर वधू के मुख में और वधू वर के मुख में मिष्ठान डालती है।
कोहाब	रूठना, नाराज होना।
कोही	क्रोधी।
कौ	पृथ्वी।
कौतुक	खिलवाड़।
कौतूहल	तमाशा, खेल, उत्सुकता।
कौमुदी	चांदनी, प्रकाश, ज्योत्सना।
कौर	कवल, ग्रास।
कौल	वामाचारी, अघोड़ी।

शब्द	अर्थ
कौशल	अयोध्यापुरी।
कौशलेश	अयोध्या के राजा।
कौशिक	विश्वामित्र, राजा कुशिक विश्वामित्र के पूर्वज थे। जैसे 'रघु' के वंशज होने के कारण राम को 'राघव' कहते हैं। 'कुरु' के वंशज होने से दुर्याधनादि को 'कौरव' कहते हैं। उसी प्रकार 'कुशिक' के वंशज होने के कारण विश्वामित्र को 'कौशिक' कहते हैं।
कंक	कौआ।
कंकण	कंगन।
कंचन	सोना, स्वर्ण।
कंचुकी	चोली।
कंज	कमल।
कंटक	कांटा।
कंडु	खुजली।
कंत	पति।
कंद	कंदमूल, जड़ी बूटी, कमल की जड़।
कंदरा	गुफा।
कंदुक	गेंद।
कंपति	समुद्र।
कम्बु	शंख।

(ख)

ख	आकाश, स्वर्ग।
खग	पक्षी, चिड़िया।
खगा	पक्षी।
खगकेतु	पक्षियों का स्वामी, गरुण।
खगहा	गैंड़ा, बैल की तरह एक जंगली पशु।
खगेश	गरुण, पक्षियों का राजा।
खचिंत	जड़ा हुआ, बिछा हुआ, फैला हुआ।
खची	जड़ा हुआ।
खटाहिं	स्थिर रहना।
खद्योत	जुगुनू।
खनि	खन।
खप्पर	साधुओं का एक पात्र। कमण्डल।
खर्पर	पीठ।

शब्द	अर्थ
खर्ष	छोटा, एक सौ अरब की संख्या।
खँभारू	दुःख, क्षोभ।
खर	१– दूषण राक्षस का भाई, २– तेज, ३– गदहा।
खरभर	उथल–पुथल, दुःख, घबड़ाहट।
खरारि	खर के शत्रु अर्थात् राम।
खरी	गदही, तीखी, तेज।
खल	दुष्ट, कपटी। ओखली।
खलु	निश्चय ही।
खस	१– एक जंगली जाति। २– एक सुगंधित घास।
खसी	खिसक गई, गिरी।
खसेऊ	गिरा।
खांगे	कमी होना।
खानिक	खान, जो खान से पैह हुआ है।
खिन्न	उदास, दुःखी।
खीन	क्षीण, दुर्वल।
खीस	घटना, कम होना।
खुटानी	समाप्त हो गई, कम हो गई।
खेद	दुःख।
खेरे	पुर, गौव, डेरा।
खेलवार	खेल।
खोरी	दोष, बुराई।
खोरे	लंगड़े, खंज।
खोह	गुफा।
खौर	तीन रेखाओं का तिलक।
खौरी	तीन रेखाओं का तिलक। आड़ा तिलक।
खंजन	एक पक्षी का नाम।
खंड	टुकड़ा, भाग।

(ग)

ग	स्वर्ग, गणेश, सुमेरु पर्वत।
गगन	आकाश।
गज	हांथी।
गजानन	गणेश जी।
गजारि	हांथी का शत्रु, सिंह।
गत	बीता हुआ।

शब्द	अर्थ
गति	१– चाल, २– मुक्ति, ३– उपाय।
गथ	दाम, मूल्य। फर्श।
गदगद	आनंद युक्त, पुलकित, प्रफुल्लित।
गन	गण, सेवक, शिव के गण, समूह।
गणराऊ	गणेश जी।
गणराज	गणपति, गणेश जी।
गणक	ज्योतिषी।
गणिका	वेश्या।
गनी	धनी, विचार किया।
गर्वित	अभिमानी, घमंडी।
गभुवारे	गर्भ के बाल, घुघुराले केश।
गम्य	जाने योग्य, ध्यान के योग्य।
गय	गज, हांथी।
गयन्द	गजेन्द्र, हांथी।
गरल	विष।
गरुता	भारीपन।
गलित	गला हुआ। गल जाते हैं।
गवहिं	गमन करते हैं, जाते हैं।
गवासा	कसाई, हत्यारा। गौ को खाने वाला।
गहगह	नगाड़े का शब्द।
गहन	घना, भयंकर।
गह्वर	१– घना, २– दुःख युक्त भारी। (गहवर हिय कह कोशला)
गहरू	विलंब, देरी।
गाइगोंठ	गोशाला।
गाजन	१– नाश करने वाला, २– गर्जन।
गाड	गड्ढा, गर्त्त।
गाडर	खस, नदी या झील में रहने वाली एक घास।
गाढ़ा	१– घना, २– विपत्ति।
गात	शरीर।
गाथा	कथा, कहानी।
गाथे	गूंथे।
गादुर	चमगादड़।
गाधि	विश्वामित्र जी के पिता का नाम।

शब्द	अर्थ
गाधिसुवन	गाधि के पुत्र, विश्वामित्र जी।
गामी	गमन करने वाला।
गारुड़ी	विष दूर करने वाला, सपेरा।
गालव	एक ऋषि का नाम। गालव विश्वामित्र के शिष्य थे। इन्होंने गुरु–दक्षिणा देने के लिए हठ किया। तब विश्वामित्र ने रुष्ट होकर ८०० श्यामकर्ण घोड़े मांगे। गालव चिंतित हो गए। वे राज ययाति के पास गए और श्यामकर्ण आठ सौ घोड़े मांगे। उन्होंने एक कन्या दिया और कहा कि जो दो सौ घेड़े देगा, वह इस कन्या से एक पुत्र उत्पन्न करे। तत्पश्चात् वह कन्या फिर कन्याभाव को प्राप्त कर लेगी। इस प्रकार गालव तीन राजाओं से कन्या देकर छः सौ श्याम कर्ण घोड़े प्राप्त किए और दो सौ घोड़ों के बदले विश्वामित्र को वह कन्या दे दिया। हठवश गालव को बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी।
गालबजाई	बात बनाकर, झूंठी बात कह कर।
गाहा	गाथा, कथा।
गिरा	सरस्वती।
गिरि	पहाड़।
गिरिजा	पार्वती जी।
गिरिनाथ	शिवजी।
गिरिराज	हिमालय पर्वत, सुमेरु गिरि।
गिरीश	शिवजी।
गिरिन्दा	पर्वतराज, सुमेरु पर्वत।
गिलाई	निगल गए।
गीध	गिद्ध।
गुंजा	घुघुची।
गुदतर	अलग होना, छोड़ना, जानना, प्रकाश होता है।
गुन	गुण, सत्, रज, तम। डोरा, रस्सी।
गुनहु	विचारो।
गुणज्ञ	गुण को जाने वाला।
गुणातीत	गुण–रहित।
गुसि	मन में विचार कर।
गुनिय	विचारिए।
गुरुजन	बड़े लोग, सयाने लोग।
गुसाई	स्वामी।

शब्द	अर्थ
गुह	निषाद, मल्लाह।
गुहा	पहाड़ की गुफा।
गुहारी	गोहार, सहायतार्थ पुकारना।
गूढ़	छिपा हुआ।
गृधराज	जटायू।
गृही	गृहस्थ।
गृहीत	पकड़ा हुआ।
गे	गए।
गेह	घर।
गो	१–सूर्य, २– इन्द्रिय, ३– बैल या गाय।
गोई	छिपाया, छिपी हुई।
गोए	छिपे हुए।
गोचर	जो इन्द्रियों द्वारा दिखाई दे या मालूम हो।
गोदावरी	एक नदी का नाम।
गोपद	गाय का खुर।
गोपद जल	गाय के खुर के छोटे से गड्ढे का जल।
गोप्य	गोपनीय, छिपाने योग्य।
गोमायु	सियार, गीदड़।
गोलक	आंख की पुतली का गोला।
गोविन्द	इन्द्रियों के स्वामी, ईश्वर।
गोसाई	स्वामी, राजा, गुरु।
गौतम	एक ऋषि का नाम, जिनकी पत्नी अहिल्या थी।
गौतम नारी	अहिल्या, चन्द्रमा तथा इन्द्र मुर्गा बनकर अर्ध रात्रि के समय बोले। गौतम ऋषि गंगातट को स्नानार्थ चल दिए। चन्द्रमा गौतम का रूप बनाकर अहिल्या से छल किए। लौट कर गौतम ने अहिल्या को शाप दे दिया और वह पत्थर हो गई। बाद में श्रीराम के स्पर्श से शाप मुक्त होकर स्त्री बन गई।
गौन	गमन, जाना।
गौर	गोरा।
गौरव	बड़ाई, यश।
गौरीश	पार्वती पति, शिव जी।
गौरोचन	गोलोचन, गाय के खुर से निकलने वाला एक सुगंधित पदार्थ।
गंजन	नाश करने वाला।

शब्द	अर्थ
गंजा	नाश किया।
गंभीर	गहरा।
ग्रह	नक्षत्र। नवग्रह होतें हैं। दुःख।
ग्राम	१– समूह २– गाँव।
ग्राही	संग्रह करने वाला।
ग्रीवा	गर्दन, कण्ठ।
ग्रीषम	गर्मी।
ग्रंथ	गांठ।

(घ)

घट	१– घड़ा, २– हृदय, ३– शरीर।
घटज	घड़े से उत्पन्न होने वाले अगस्त्य जी। मित्रावरुण ऋषि ने उर्वशी अप्सरा को देखा। वे कामातुर होकर उसे पकड़ना चाहे। वह उड़कर इन्द्रलोक को चली गई। मुनि ने अपने वीर्य को एक घड़े में रख दिया। उसी से अगस्त जी पैदा हुए।
घटा	समूह, बदली।
घटाटोप	अत्यन्त अंधकार। उदा० (घटाटोप करि चहुंदिश घेरी) लंका०।
घटिहिं	करेगी, होगी।
घन	१– बादल, २– लोहे का घन, ३– घना।
घमोइ	एक कटीला पेड़, जब यह बांस की कोटि में उगता है, तब बांस की कोटि सूख जाती है। उदा० (वेणु वंश सुत भइस घमोई) लंका०।
घरनी	स्त्री, घरवाली।
घवरि	गुच्छा, समूह।
घाऊ	घात, चोट।
घात	धोखा।
घातिनि	मारने वाली।
घालक	मारने वाला, नष्ट करने वाला।
घाला	नष्ट किया।
घालिके	नष्ट किया।
घुनाक्षर	लकड़ी में घुन से कटी हुई अक्षर के आकार की लकड़ी। घुन से बना अक्षर। स्वतः बन गई चीज। संयोगात् बनी चीज।

शब्द	अर्थ
घुणाक्षर–न्याय	यदि कोई कार्य स्वतः हो जाए, तो उसे 'घुणाक्षर न्याय कहते हैं।
घुमिति	घूमकर।
घृत	घी।
घ्राण	नाक, गन्धि।

(च)

चक्कवै	चक्रवर्ती राजा। उदा० (ससुर चक्कवै कौशल राऊ) अयो०।
चकित	आश्चर्ययुक्त।
चक्र	पहिया, सुदर्शन।
चक्रवाक	चकई चकवा।
चक	चक्षु, आंख।
चतुरंग	चार भागों में विभाजित सेना। यथा :–हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल।
चवरि	१– शीघ्र, २– घुसकर
चपल	चंचल।
चपेट	तमाचा, दबाव, दण्ड।
चर	दूत।
चरणपीठ	पादुका, खड़ाऊ।
चरम	अन्त, अन्तिम।
चराचर	चल और अचल, जड़ चेतन।
चरित	जीवनवृत्त, व्यवहार।
चरु	यज्ञाहुति, यज्ञ में हवन करने की वस्तु।
चवई	चुवे, जल या रस का गिरना।
चाव	इच्छा, प्यार, आनन्द।
चाका	पहिया।
चाकी	दबाकर, दबाव।
चाख	नीलकंठ पक्षी। (चारा चाख वाम दिशि लेई)।
चाप	धनुष, दाबा।
चापन	दबाना।
चापी	दबाई।
चामर	चँवर, मूर्छल।
चामुण्ड	दुर्गा जी, योगिनी का नाम।
चार	दूत, चतुर।

शब्द	अर्थ
चार अवस्था	जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।
चारु	सुन्दर।
चाहि	इच्छा, देखकर।
चिक्करहिं	चिग्घार करते हैं।
चिन्तक	विचारक, चिंता करने वाला।
चित्रकेतु	एक राज का नाम, इनके कई रानियां थीं। सबने राय करके इनके एक पुत्र (सौत के पुत्र) को रोटी में विष देकर मार डाला था।
चिन्तामणि	एक मणि का नाम, यह सारी इच्छाओं को पूर्ण कर देती है। काल्पनिक मणि।
चिदाकाश	चैतन्य आकाश।
चिदानन्द	चैतन्य आनन्द रूप।
चिराना	पुराना, चिरकाल का।
चिरंजीवी	चिरकाल तक जीने वाला, मार्कण्डेय
चीर	वस्त्र, कपड़ा।
चुनौती	ललकार, चैलेंज।
चूड़ाकरन	मुण्डन संस्कार।
चेरा	शिष्य, सेवक।
चेरी	दासी, किंकरी।
चोखा	अच्छा, सुन्दर।
चोप	उत्साह, इच्छा।
चौगान	गेंद का एक खेल विशेष उदा० (खेल भिालु कीश चौगाना। लेका०।
चौतनी	चौकोनी टोपी।
चौथपन	वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
चौहट	चौराहा।
चंग	पतंग।
चंचरीक	भौरा।
चंड	प्रचंड, तेज, क्रोध।
चन्द्रमौलि	शिव, चन्द्रमा हो शिर पर जिसके।
चन्द्रमा मुनि	अत्रि के पुत्र।
चन्द्रहास	तलवार, कृपाण। उदा० (चन्द्रहास हरु मम परितापा) सुन्दर०
चन्द्रिका	चांदनी, प्रकाश।

शब्द	अर्थ

(छ)

छई	क्षय रोग, एक रोग जिसमें कलेजे से मुख के द्वारा खूब गिरता है।
छत	क्षत, फोड़ा, घाव। टूटा हुआ। उदा० (पाके छत जनु लाग अंगारा) अयो०
छति	क्षति, हानि।
छन्न	ढका हुआ, छिपा हुआ।
छवि	शोभा, सुन्दरता।
छविगन	शोभा का समूह।
छबीले	सुन्दर।
छमा	क्षमा, १– पृथ्वी २– सहनशीलता।
छत्रक	कुकुरमृत्ता, एक घास।
छाछी	मट्ठा।
छाजा	शोभित हुआ।
छारा	क्षार, राख।
छिति	क्षिति, पृथ्वी।
छिद्र	छेद, दोष।
छुद्र	(क्षुद्र) छोटा।
छुधित	(क्षुधित) भूंखा।
छेका	घेरा।
क्षेमकरी	एक पक्षी का नाम, यह शुभसूचक होती है।
छेमा	क्षेम, सुख; मंगल।
छेत्र	क्षेत्र, भूमि, खेत।
छैल	बांका, छैला, छबीला, शौकीन।
छोनिप	क्षोणिप, पृथ्वी का स्वामी, राजा।
क्षोणि	पृथ्वी।
छोभा	क्षोभा, व्याकुल, दुःखी।
छोहा	प्रेम, प्रीति।
छौना	बच्चा, बकरी या सुअर का बच्चा।

(ज)

जग	संसार।
जगजोनी	जगयोनि, ब्रह्मा, संसार को उत्पन्न करने वाला
जगत्	संसार।
जगदीश	ईश्वर।

शब्द	अर्थ
जगदम्बा	जगत् मी माता। पार्वती जी, दुर्गा जी।
जटाजूट	जटा का जूड़ा या समूह।
जटिल	जटाधारी, कठिन, जो समझ में न आवे।
जठर	पेट।
जठरी	वृद्धा, बूढ़ी।
जड़	मूर्ख।
जड़जन्तु	मूर्ख जीव।
जड़ताई	मूर्खता।
जती	यती, सन्यासी।
जन	दास, भक्त, मनुष्य।
जनक	पिता।
जनकौरा	जनक के संबंधी।
जनयित्री	जन्म दात्री, माता।
जन्मान्तर	दूसरा जन्म।
जनि	नहीं, मत, जन्म।
जनित	उत्पन्न हुआ।
जनेत	बारात।
जपन्ति	जपते हैं, याद करते हैं।
जपामि	मैं जपता हूँ।
जम	१– यम, यमराज, २– अहिंसा,सत्य, अस्तेयं, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह–ये पांच 'यम' कहलाते हैं।
जमदग्नि	परशुराम जी के पिता का नाम।
जयति	जय हो।
जयन्त	इन्द्र के पुत्र का नाम। यह कौवा बन कर सीता जी को चोंच मारा था।
जरठ	वृद्ध, बुढ़ापा।
जर्जर	दुर्बल, क्षीण, पतला–दुबला।
जल अलि	जल का भौंरा।
जल कुक्कुट	जल मुर्गा।
जलचर	जल में चलने या रहने वाला, मछली आदि जल जन्तु।
जलंज	कमल।
जलयान	नौका, जल का जहाज।
जलद	बादल।
जलधर	१– बादल, मेघ, एक रोग, एक राक्षस का नाम।
जलधि	समुद्र।

शब्द	अर्थ
जलराशि	समुद्र, जल का समूह।
जल रुह	कमल, जलज।
जल विहंग	जल का पक्षी।
जलाशय	तालाब।
जल्पक	बोलने वाला।
जल्पसि	बकवाद करते हो।
जल्पहिं	बकवाद करते हैं।
जवनिका	पर्दा।
जशोमति	यशोदा जी।
जाग	याग, यज्ञ।
जागी	मालूम हुई, जाहिर हुई, नींद। त्याग कर उठी।
जाचक	याचक, मांगने वाला।
जाचत	याचत, मांगता है।
जाचा	याचा, मांगा।
जातकर्म	पुत्र के जन्म के समय नान्दी श्राद्ध आदि वैदिक कृत्य।
जातना	यातना, पीड़ा, कष्ट।
जातरूप	स्वर्ण, सोना।
जातुधान	यातुधान, राक्षस।
जानु	घुटना।
जापक	जप करने वाला।
जाम	याम, पहर।
जोनी	योनि, १– नारी का मूत्राशय, गुह्य स्थान, २– जाति, ३–कारण।
जामाता	दामाद।
जामिक	यामिक, पहरेदार।
जामिनी	(यामिनी) रात्रि।
जाया	स्त्री।
जाल	१–समूह, २–झरोखा।
जावक	(यावक), महावर।
जाबालि	एक ऋषि का नाम।
जिनस	वस्तु।
जीह	जीभ।
जुग	(युग) १– सतयुगादि चार युग, २– दो, जोड़ा।
जुझरू	लड़ाकू, लड़ने वाला।

शब्द	अर्थ
जुवती	(युवती), जवान स्त्री।
युवराज	राज्य का उत्तराधिकारी।
जुवा	(युवा), तरुण, जवान।
जुवानू	जवान पुरुष।
जूझा	युद्ध में मरा, लड़ा।
जूथ	(यूथ) समूह, झुंड।
जूथप	(यूथप) सेनापति।
जूरी	इकट्ठा करके।
जोई	देखा।
जोक	१– देखो। २– जो।
जोग	(योग) १–चित की वृत्तियों को रोक कर एक जगह करना। २–मिलन। ३–जोड़।
जोजन	(योजन) चार कोश।
जोती	(ज्योति) प्रकाश।
जंगम	चलने वाला।
जंत्रित	(यंत्रित) टांका लगाए गए। बंधे हुए।
जंबु	जामुन।
जंबुक	सियार।

(झ)

झंगु लिया	बालकों का कुर्त्ता।
झटिति	शीघ्र, जल्दी।
झष	मछली।
झषकेतु	कामदेव, कामदेव की ध्वजा मछली की है।
झारी	१–समूह २–झाड़ी।
झोंटी	लम्ब केश, चोटी।
झंपेड	छिपकर या, ढंक गया।

(ट)

टंकोर	टंकार, जोरों का शब्द।
टिटिभ	टिटिहरी।
टेई	धार को तेज किया। चोखा किया।
टेक	१–सहारा, २–हठ।
टेव	आदत, स्वभाव।
टेर	पुकार।

शब्द	अर्थ
	(ठ)
ठकुर	ठाकुर, राजा, स्वमी।
ठट्ठा	समूह (देखेउ जाय कपिनि के ठट्ठा) लंका०
ठवनि	चाल।
ठाट	रचना, बनाना, निर्माण।
ठाहरू	स्थान, जगह।
ठाऊँ	जगह, घर, स्थान।
	(ड)
डगै	हिलै, हिलना, चलायमान होना।
डमरूआ	एक रोग, इसमें पेट बढ़ जाता है।
डसि	काट कर, डस कर।
डहकि	जट या ठग कर, धोखा देकर।
डाढ़े	जलन, जला।
डाबर	गड्ढा, गन्दा। गड़हा।
डासन	विछौना, बिस्तर।
डासी	बिछाकर।
डिंडिमी	एक प्रकार का बाजा।
डीठा	देखा।
डीठी	दृष्टि।
	(ढ)
ढनमती	लुढ़क गई, गिर गई।
ढिंग	समीप।
ढेक	सारस पक्षी।
ढोटा	बेटा, पुत्र।
ढोर	ढोल।
	(त)
तर्जनी	अंगूठे के बगल की अंगुली।
तज्ञ	ईश्वर को जाने वाला।
तट	किनारा।
तड़ाग	तालाब।
तड़ित	बिजली।
तत्पर	तल्लीन, लगा हुआ।
तथा	१–वैसे, २– और।

शब्द	अर्थ
तथापि	तो भी, फिर भी।
तदपि	तब भी।
तन	ओर, तरफ।
तनय	पुत्र, बेटा।
तनु	शरीर।
तनुजा	बेटी, पुत्री।
तनोतु	विस्तार करे।
तनोरुह	शरीर का रोम या रोंवा।
तपोधन	तपस्वी, साधु।
तम	अंधकार।
तमकि	ऐंठ कर, त्युरी बदल कर।
तमारी	सूर्य।
तमाल	एक वृक्ष विशेष, जिसकी तम्बाकू के पत्ते सी पत्ती और लिसोड़े के समान फल होता है।
तमी	रात, रात्रि।
तमीचर	निशाचर, राक्षस।
तर	तरे, नीचे।
तरकेड	कूदा, उछला।
तरज	तड़प।
तरजन	झिझकारना, धिकारना।
तरनतारन	स्वयं तरे और दूसरों को भी तारे।
तरनी	(तरणी) नौका। उदा० (तरनिउं मुनि घरनी होइ जाई) अयोध्याकाण्ड।
तरनि	(तरणि) सूर्य उदा० (भयउ प्रकाश तरनि सम) लंका०।
तरपन	(तर्पण) १– तृप्त होना २– मन्त्र द्वारा पितरों को जल देना।
तरल	चंचल, पिघला हुआ, द्रवणशील।
तरु	वृक्ष।
तरुण	जवान, युवा।
तरुणी	युवा स्त्री, जवान स्त्री।
तरुणाई	युवावस्था, जवानी।
तरेरे	घुड़के, डांटे, नेत्र से डाटा।
तरंग	लहर।
तरंगी	मौजी, मस्त मौला।

शब्द	अर्थ
तरंगिणी	नदी।
तल्प	शय्या, बिछौना, पलंग।
तांटक	तरकी, कर्णफूल, कर्णभूषण।
ताड़त	पीटता है, दण्ड देता है।
तात	१– पिता, २– पुत्र, ३– भाई, ४– सखा, ५– गर्म।
तापस	तपस्वी।
तापे	तपे, जले।
तामरस	कमल।
तामस	क्रोध, तमोगुणी।
तारक	१–तारने वाला, २– एक मंत्र, ३– तारकासुर।
तारा	१– तार दिया, २– बलि की स्त्री का नाम।
ताल	ताड़ का पेड़।
तिमिर	अंधकार।
तिमुहानी	जहाँ तीन मार्ग या नदी मिले हों।
तिय	स्त्री।
तिरहुति	मिथिला देश, जनकपुरी।
तिलक	टीका।
तिष्ठे	रहे।
तीछे	तीक्ष्ण, तेज।
तीरथपति	तीर्थराज, प्रयाग।
तुभ्यम्	तुम्हारे लिए।
तुरंग	घोड़ा।
तुराई	१– तोषक, तकिया, २– जल्दी से, ३– तोड़कर। उदा० (भावै अति प्रिय सेज तुराई) अयो०।
तुला	तराजू।
तुषार	पाला, बर्फ।
तुहिन	पाला, बर्फ।
तूणीर	तरकस, तीर रखने का चोंगा।
तूरी	तुल्य, समान।
तूल	रुई।
तृजग	(त्रिर्यक्) चींटी कीड़ा आदि जीव।
तृषित	प्यासा।
ते	वे।
तोप्यो	ढक लिया।

शब्द	अर्थ
तोमर	शस्त्र विशेष। जाति विशेष। क्षत्रियों का एक गोत्र।
तोयनिधि	जलराशि, समुद्र।
तोरण	बन्दरवार।
तोरावति	वेगशाली, तीव्र गति वाली।
तोष	संतोष।
त्वचा	छिलका, ऊपर का चर्म, चमड़ा, खाल।
त्वदंघ्रि	तुम्हारा चरण।
अंघ्रि	चरण, पैर।
त्वदीय	तुम्हारा, तुम्हारे लिए।
त्रयरेखा	पेट पर की तीन रेखाएँ।
त्रसित	भयभीत, डरे हुए।
त्राता	रक्षक।
त्रातु	रक्षा करो।
त्रासक	भयंकर।
त्राहि	रक्षा करो।
त्रिकाल	भूत, वर्तमान, भविष्य, तीनों काल।
त्रिधा	तीन प्रकार से। द्विधा = दो प्रकार से।
चतुर्धा	चार प्रकार से।
पञ्चधा	पांच प्रकार से।
इसी प्रकार	षट्धा, सप्तधा, अष्टधा, नवधा आदि शब्द बने हैं।
त्रिपुर	त्रिपुरासुर, एक राक्षस का नाम, यह पाताल, पुथ्वी और स्वर्ग–'तीनों लोकों' में घर बना कर रहता था। बड़ा उपद्रवी था। शंकर जी ने इसे अन्त में मार डाला। इसीलिए शिव जी को 'त्रिपुरारि' या 'पुरारि' कहते हैं।
त्रिपुण्ड	तीन रेखा का तिलक। उदा० (भाल विशाल त्रिपुंड विराजा) बाल०।
त्रिविक्रम	विराट रूप, जो वामन भगवान् ने बलि राजा के यहाँ तीन कदम पृथ्वी नापते समय धारण किया। तीन विराट कदम।
त्रिविध	तीन प्रकार से।
त्रोण	तरकस।

(थ)

थल	स्थल, भूमि।
थलचर	पृथ्वी पर घूमने वाले, भूचारी।

शब्द	अर्थ
थाना	स्थान, ठिकाना।
थिति	(स्थिति), नीवं, ठहराव।

(द)

दक्ष	१– चतुर, २– दक्ष प्रजापति।
दक्षसुता	सती, महादेव जी की स्त्री।
दत्त	दिया गया। दधीचि = दधीचि एक ऋषि का नाम जिनकी हड्डी से इन्द्र का वज्र बना था।
दनुज	दैत्य, दानव।
दम	इन्द्रियों को दबाना या रोकना।
दमक	चमक।
दमनीय	दमन करने के योग्य।
दमन	नाश।
दम्पति	स्त्री–पुरुष।
दरशी	दर्शी, देखने वाला।
त्रिकालदर्शी	तीनों कालों को देखने वाला। त्रिकालज्ञ।
दर्प	अभिमान।
दर्भ	कुशा।
दल	१– पत्ता, २– सेना, ३– समूह, ४– नाश करके
दलकि	कांप गया, दहल गया।
दलमले	पीस डाले।
दलन	नाश करना।
दलित	कुचला हुआ, पीसा गया, रगड़ा गया।
दव	वन की अग्नि।
दवारि	दावानल, वनाग्नि। दावाग्नि।
दशन	दांत।
दहन	१– जलाना, २– अग्नि।
दाड़िम	अनार।
दातार	देने वाला।
दादुर	मेंढक।
दाप	(दर्प) गर्व।, अभिमान।
दाम	१– रस्सी, २– रुपया।
दामिन	बिजली।
दायक	देने वाला।
दारन	फाड़ना, चीरना।

शब्द	अर्थ
दारब	नाश करो।
दारा	स्त्री।
दारिका	कन्या, पुत्री।
दारु	१– लकड़ी, २– हल्दी।
दारुण	कठोर। भयानक।
दारुनारि	लकड़ी की स्त्री अर्थात् कठपुतली।
दाह	जलन।
दिगम्बर	बस्त्र–रहित, नंगा। शिव जी।
दितिसुत	हिरण्याक्ष दैत्य और हिरण्यकशिप।
दिनकर	सूर्य।
दिनदानी	अति दयालु, दीनों को देने वाला।
दिनमणि	सूर्य।
दिनेश	सूर्य।
दिशिप	इन्द्र, कुबेरादि दिग्पाल। दिग्पाल।
दिवस	दिन
दिव्यतनु	दिव्य शरीर, जरा–मरण रहित शरीर।
दिव्य दृष्टि	अलौकिक ज्ञान, हृदय के नेत्र।
दिशिराज	दिशाओं के स्वामी, इन्द्र कुबेर आदि।
दीक्षा	मन्त्रोपदेश, प्रशिक्षण।
दीप्ति	प्रकाश।
दीसा	देखा।
दुकूल	रेखमी वस्त्र।
दुर्ग	किला, गढ़।
दुर्गम	जहाँ कठिनाई से जाया जाय, दुष्प्राप्य।
दुर्घट	कठिनाई से जाने योग्य, दुर्ज्ञेय।
दुनो	दुनिया, संसार।
दुर्वचन	बुरी बात, गाली, अपशब्द।
दुर्वाद	बुरावचन।
दुर्वासस	गन्दे कपड़े वाला, दूषित वस्त्र वाला। दुर्वासा ऋषि।
दुरन्त	अति कष्टदायक, कठिन।
दुरतिक्रम	कठिनता से पार करने योग्य, दुलघ्य।
दुराधर्ष	शत्रु जिसे दबा न सके।
दुराराध्य	कठिनाई से सेवन करने योग्य।
दुराव	छिपाव, छिपाना।

शब्द	अर्थ
दुरावा	छिपाया।
दुरित	पाप।
दुस्सह	कठिनाई से सहने योग्य।
दुर्जन्तु	दुष्ट जन्तु, सर्प।
दुहाई	शरण के लिए पुकारना।
दुन्दुभ	नगाड़ा बाजा, एक दैत्य का नाम, जिसे वालि ने मारा था।
दुधमुंह	बालक, दूध के दांत वाला।
दूषण	दोष।
दृग	आंख, नेत्र।
दृग अंचल	पलक।
दृगंचल	पलक। उदा० (जनु निमितजेउ दृगंचल) बाल०।
देवक	देवतन।
देवतरु	कल्पवृक्ष।
देवधुनि	१– गंगा २– आकाशवाणी।
देवऋषि	देवर्षि नारद।
देवसर	मानसरोवर।
द्वैत	भेदबुद्धि। उदा० (क्रोध कि द्वैतक बुद्धिबिनु) उ०।
दण्डक	१– राज़ा। २– एक छंद का नाम। ३– दण्डकवन।
दम्भ	पाखण्ड, झूठा व्यवहार।
दंस	(देश) वनमक्खी, दांत से काटना।
द्रवै	पिघलना, बहना।
द्रुम	पेड़।
द्रव्य	वस्तु, चीज, धन।
द्वन्द्व	१– दो। २– सुख–दुःख, राग–द्वेष, भला–बुरा, आशा–निराशा आदि को द्वन्द्व कहते हैं।
द्वादश	बारह।
द्विजराजू	१– श्रेष्ठ ब्राह्मण २– चन्द्रमा।

(ध)

धनद	कुबेर।
धनिक	धनी।
धनु	धनुष।
धनेश	कुबेर।
धनेश	कुबेर।

शब्द	अर्थ
धन्या	भाग्यवती स्त्री।
धन्वी	१– धनुषधारी २– छोटी धनुष।
धर्मध्वज	धर्म की झूठी ध्वजा फहराने वाला। पांखण्डी। मिथ्याचारी।
धरषि	दबाकर।
धरा	पृथ्वी।
धरासुर	ब्राह्मण, भूसुर।
धवल	श्वेत, सफेद।
धाता	विधाता, ब्रह्मा जी।
धाम	घर, देवस्थान।
धावन	दूत।
धुनि	(ध्वनि) शब्द, आवाज।
धुर	धुरी, पहिया, सीमा।
धुरीन	बोझा ढोने वाला।
धर्मधुरीन	धर्म का बोझ ढोने वाला। महान् धर्मात्मा।
धूति	ठगना, धोखा।
धूमकेतु	अग्नि, धूम की पताका वाला, अग्नि की पताका धुँए की है। २– पुच्छलतारा नामक ग्रह। इसका दिखाई पड़ना अमंगलकारी होता है।
धृति	धैर्य।
धेनुमति	गोमती नदी।
धोरी	१– मुख्य, २– बैल–जो ठेले या गाड़ी में आगे जोता जाता है, ३– अगुवा, ४– कपिला गाय, ५– धुरी को उठाने वाला।
धंधक	धंधा, व्यापार।
धौं	अथवा, या।
किधौ	अथवा, या, क्या जाने।
ध्रुव	१– राजा उत्तानपाद के पुत्र। २– अटल।

(न)

नई	१– नदी, २– नवीन उम्र।
नकुल	१– नेवला, २– राज युधिष्ठिर के छोटे भाई।
नक्र	घड़ियाल, मगर।
नटत	१– नाचता है, २– इन्कार करता है।
नतरु	नहीं तो, अन्यथा।

शब्द	अर्थ
नति	नम्रता, प्रणाम।
नफीरी	शहनाई, एक बाजा।
नभग	पक्षी। उदा० (नभगनाथ पर प्रीति न थोरी) उ०।
नभ्रगेश	गरुण, पक्षिराज।
नभचर	पक्षी आदि। आकाशगामी।
नमत	नमस्कार करता है।
नमामहे	हम लोग नमस्कार करते हैं।
नमामि	मैं प्रणाम करता हूँ।
नमित	झुका हुआ।
नय	नीति।
नयनपट	पलक।
नरहरि	नरसिंह जी।
नर्तक	नट, नाचने वाला।
नलिन	कमल।
नलिनी	कमलिनी।
नव	१– नया, २– नौ।
नवधा	नवप्रकार से।
नवनीता	मक्खन।
नवभक्ति	नौ प्रकार की भक्ति अर्थात् श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरण सेवा, अर्चन, चंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन।
नवल	नया, नवीन।
नश्वर	नाश होने वाला।
नखत	वारे।
नहरूआ	एक प्रकार का रोग या बीमारी।
नाहरु	सिंह, बाघ, तांत।
नाई	समान, तरह।
नाक	१– स्वर्ग, २– नासिका।
नाकनटी	अप्सरा।
नाग	१–हांथी, २– सर्प।
नागर	चतुर।
नागरिपु	सिंह, हांथी का शत्रु।
नायक	स्वामी।
नारकी	पापी, नरक का अधिकारी।
नाराच	तीर, बाण।

शब्द	अर्थ
नाल	दण्डी, नली, जड़। डंठल।
नावरि	नौका चलाना।
नाह	पति।
निकर	समूह।
निकाम	१– समूह, २– निष्काम।
निकेतन	घर।
निकेत	घर।
निकाय	समूह, झुंड।
निकंदन	नाश करने वाला।
निगम	वेद।
निगूढ़ा	गुप्त छिपा हुआ।
निग्रह	१– रोक, २– दंड
नितम्ब	कमर के नीचे का भाग, चूतड़।
निधन	मृत्यु।
निदान	अंतिम कारण।
निधान	आश्रय, घर, कोष।
निधि	बहुत धन। नव प्रकार की निधियाँ होती हैं।
निपट	बहुत।
निपाता	नाश किया।
निविड़	घना।
निवृत्ति	संसार का त्याग, छुटकारा।
निभ	समान, सदृश।
निमि	एक राज का नाम। जनक जी के पूर्वज। पलक पर इनका निवास माना जाता है।
नियोग	आज्ञा।
निर्झर	झरना
निरामिष	बिना मांस।
निरंजन	माया–रहित, राग–रहित।
निषंग	तरकश।
निशित	तीक्ष्ण, तेज।
निसेनी	सीढ़ी।
नीहार	पाला, तुषार।
नीड	घोसला।
नीप	कदम्ब

शब्द	अर्थ
नीलकण्ठ	१– पक्षी विशेष, २– शिवजी
नीलोपल	नीलमणि।
निर्वाण	मुक्ति।
नेति	ऐसा नहीं।
नेपथ्य	भीतर का पर्दा। पात्रों के साजश्रंगार का कक्ष।
नंदिनी	१– आनंद देने वाली, २– पुत्री, लड़की।
नान्दीमुख	बालक के जन्म समय में किया जाने वाला श्राद्ध।

(प)

पटल	समूह।
पट	कपड़ा।
पटतर	उपमा, समता।
पटु	चतुर।
पटोरे	रेशमी वस्त्र।
पटली	पंक्ति, श्रेणी।
पतंग	१– सूर्य, २– पक्तियां, पांखी।
पथिक	राही, बटोही।
पथ	मार्ग।
पंथ	मार्ग।
पदज	पैर की अंगुली।
पदचारी	पैदल यात्री।
पदत्राण	जूता, पनही।
पदपीठ	खड़ाऊँ।
पदाति	पैदल।
पदिक	जड़ाऊ चौकी। हृदय पर लटका कर पहना जाने वाला आभूषण।
पदुम	(पदम्) १– कमल। २– संख्या विशेष।
पद्मराग	लालमणि।
पन	१– प्रतिज्ञा, २– अवस्था।
पनव	ढोल।
पनस	कटहल।
पय	दूध, २– पानी, जल
पयद	१– थन, २– बादल।
पयनिधि	क्षीर सागर, दूध का समुद्र।
परत्र	परलोक।

शब्द	अर्थ
परमिति	मर्यादा, सीमा।
परमारथ	मोक्ष, वास्तविक।
परसि	छूकर।
परशुधर	परशुराम, फरसा धारण करने वाला।
परशु	फरसा।
परागा	फूल की रज।
पराभव	१– हानि, २– निराहर, ३– प्रलय।
परावर	(पर+अवर) ब्रह्म तथा माया जीव आदि। अवर = माया।
परिकर	कटि, कमर।
परिघ	मूसलाकार अस्त्र।
परिचर्या	सेवा।
परिचारक	सेवक, दास, चपरासी।
परिचारिका	दासी।
परिछिन्न	आच्छादित, चिरा हुआ, ढँका हुआ।
परिताप	दुःख।
परितापी	दुःख देने वाला।
परितोष	संतोष।
परित्राता	रक्षक।
परिधान	वस्त्र, पहनावा।
परिपाटी	रीति, नियम।
परिहास	हँसी, निन्दा, उपहास।
परिहरि	छोड़कर, त्यागकर।
परुष	कठोर।
परेश	परमेश्वर, परलोक का स्वामी।
पवि	वज्र।
पल्लव	नया पत्ता।
पखाउज	मृदंग, ढोल।
पायक	प्यादा, सेवक।
पाकरिपु	इन्द्र, पाक राक्षस का शत्रु।
पावन	पवित्र।
पाहन	पत्थर।
पाहुन	अतिथि, मेहमान।
पांवर	नीच।
पांवरि	खड़ाऊँ।

शब्द	अर्थ
पिक	कोयल।
पिनाक	शिव का धनुष।
पिपीलिका	चींटी।
पिरोजा	पीले रंग की मणि।
पिसुन	चुगुलखोर, दुष्ट।
पिव	मोटा।
पीयूष	अमृत।
पुग	सोपाड़ी।
पृथुराजा	एक रघुवंशी राजा का नाम।
पुट	दोना।
पुटक	दोना।
पीवर	मोटा।
पुरट	स्वर्ण।
पुराकृत	पहले का किया हुआ।
पुरारि	शिव जी।
पुराडास	यज्ञ की खीर।
पुहुमि	भूमि।
पोच	नीच।
पोत	जहाज, नौका।
पंकरूह	कमल।
प्रकृष्ट	उत्तम।
प्रगल्लभ	धृष्ट, चतुर।
प्रत्यूह	विघ्न।
प्रदोष	रात्रि का प्रारम्भ।
प्रणय	प्रेम।
प्रभंजन	पवन, वायु।
प्रमदा	स्त्री, नारि।
प्रलाप	बकवाद।
प्रसव	उत्पत्ति, जन्म।
प्राची	पूर्व।
प्राविट	वर्षा।
पावस	वर्षा।
प्रोक्त	कहा गया।

शब्द	अर्थ

(फ)

फनिक	साँप।
फटिक	स्फटिक पत्थर, सफेद पत्थर।
फणिक	साँप।

(ब, व)

नोट :– अवधी भाषा में 'मानस' में 'ब' तथा 'व' वर्ण मिले हुए हैं। अतः दोनों एक साथ दिए जा रहे हैं।

वक	बगुला।
वक्ता	कहने वाला।
वकुल	मौलश्रि का फूल।
वक्र	टेढ़ा।
वगरे	फैले।
वक्ष	वचन।
बक्ष	वत्स, पुत्र, बछड़ा।
बछल (वक्षल)	पुत्र, प्रेमयुक्त, दयायुक्त।
वट	बरगद।
वटु	ब्रह्मचारी।
बटोही	रास्ता चलने वाला।
वडवानल	समुद्र की अग्नि।
दावानल	वन की अग्नि।
जठराग्नि	पेट की अग्नि।
वद	कहो, कहिए।
वदति	कहता है।
वंदन	मुख।
वदर	बेर का फल, बैर का फल।
बधिक	बहेलिया, वध करने वाला।
वधिर	बहिरा।
वधू	स्त्री।
वधूटि	नई बहू।
बन्धुजीव	दुपहरिया का पेड़।
बन्धुर	दुपहरिया का पेड़।
वनचर	वनवासी।
वनज	जलज, कमल।

शब्द	अर्थ
वनमाला	फूल और पत्तों की माला। गले से पैरों तक लम्बी, जो तुलसी, कुन्द, मंदार, पारिजात और आम्र की बनी होती है।
बनिक (वणिक)	बनिया।
वय	शरीर।
वयुष	शरीर।
वमत	कै करता है, उल्टी करता है।
वमन	उल्टी, कै।
वयष	आयु।
वयारि	हवा, वायु।
वर	१– पति, दूल्हा, २– श्रेष्ठ
वरबरनी (वरवर्णी)	श्रेष्ठ रंग वाली।
वराह (वाराह)	सुअर।
बरिवंड	बलशाली, बलवान।
बरी	ब्याही।
वरीषा	वर्ष।
वरु	बल्कि।
वरूण	जल के देवता।
वरूथ	समूह।
वरूथा	समूह।
वरेखी	व्याह, दूल्हा ठहराना।
बर्बर	नीच, दुष्ट, असभ्य।
वर्म	कवच।
बलकावा	उन्मत किया।
बलाक	बगुला।
बलाका	बगुली।
बलाहक	बादल, मेघ।
वलित	घिरा हुआ।
बलीमुख	बन्दर।
बसन	वस्त्र।
वसवर्ती	अधीन, वश में।
बसह	वृषभ, बैल।
बहोरी	फिर, पुनः।

शब्द	अर्थ
बाऊ	वायु, हवा।
वाग	वाणी।
वागीशा	श्रेष्ठवाणी।
वागुर	जाल, फन्दा।
वाचाल	अधिक बोलने वाला।
वाजिमेध	अश्वमेध यज्ञ।
वसीठी	दूत।
वसुधा	पृथ्वी।
वाजि	घोड़ा।
वाट	मार्ग।
वाटिका	फुलवारी।
वात	हवा, वायु।
वातुल	पागल।
वादि	व्यर्थ।
वादी	कहने वाला, शत्रु।
बाधक	रोकने वाला।
बाधा	विघ्न, रोड़ा।
वाण	१– वाणासुर, २– तीर।
वापिका	बावणी, छोटा गहरा पक्का जलाशय।
वापुरो	तुच्छ, छोटा, बेचारा, गरीब।
वाम	स्त्री।
वायस	कौवा।
वारन	१–रोकना, २–हाथी।
वारहवाट	तितर–बितर, बिखरा हुआ।
वारि	जल।
वारिचर	जल में चलने वाला जीव, मछली।
वारिचरकेतु	कामदेव, मीनकेतु।
वारिद	कमल।
वारीश	समुद्र।
वारूणी	मदिरा।
वासर	दिन।
वासव	इन्द्र।
वाहन	सवारी।
वाहिनी	सेना।

शब्द	अर्थ
विकट	भयंकर।
विकराल	भयानक।
विकार	दोष।
विक्रम	पराक्रम।
विग्रह	विराध।
विख्यात	प्रसिद्ध।
विचक्षण	चतुर।
विचेतन	अचेतन।
विटप	वृक्ष।
विडम्ब	छल, कपट, नाटक।
विडम्बना	कपट, ढोंग।
वित्त	धन।
वितान	तम्बू, चंदोवा।
विथुर	फैल, बिखरे।
विद	जाने वाला।
विन्दक	पाने वाला।
विदिंत	ज्ञात, प्रसिद्ध।
विदिषि	दिशा का कोना।
विदूषक	भांड, हसाने वाला, मजाकिया।
विदुषी	पंडिता।
विदेह	१–बिना देह, २–जनक जी।
विद्यमान	वर्तमान।
विद्रुम	मूंगा।
विधवा	जिस स्त्री का पति न हो।
विधाता	ब्रह्मा।
विधात्री	ब्रह्माणी।
विधि	१–ब्रह्मा, २–भाँति तरह।
विधु	चन्द्रमा।
विधुन्तुद	राहु।
विपिन	वन।
विवर	विल।
विवरण	बदरंग।
विवाकी	नाश।
विवुध	देवता।

शब्द	अर्थ
विवुधवैद	अश्विनी कुमार।
विवेक	ज्ञान।
विभु	ईश्वर।
विभूति	धन।
विरति	त्याग।
विलोचन	नेत्र।
विषाद	दुःख।
विष्ठा	मल, गोबर।
विशद	निर्मल, शुद्ध।
विशारद	विद्वान।
विशिख	वाण।
विशोक	शोकरहित।
विश्वरूप	सर्वरूप।
विहंग	पक्षी।
विहरति	घूमती है, विहार करती है।
विहरू	फाटना, फाटा।
विहाइ	छोड़कर।
विहान	सबेरा, प्रातःकाल।
विहार	क्रीड़ा, खेल, भ्रमण।
विहीना	बिना, रहित।
बीथी	गली।
बीथिका	गली, छोटी गली।
बिवि	दो, उभय।
वीर	१–बलवान, २–भाई, ३–वीर रस।
वीरभद्र	शिव जी के गण।
बुझाई	समझाकर।
बुध	विद्वान, पंडित, चन्द्रमा का पुत्र, एक ग्रह।
बूता	बल, शक्ति।
वृक	भेड़िया।
वृषकेतु	शिव जी, जिसकी ध्वजा बैल की हो, शिव की ध्वजा बैल है।
वृष	बैल।
वृषभ	बैल।
वृष्टि	वर्षा।

शब्द	अर्थ
वृषली	शुद्रा, शुद्र स्त्री।
वृषल	शुद्र।
वृन्दारक	देवता।
वेत	आकाश।
वेदिका	वेदी।
वेद	छेद। श्रुति।
वेनी	(वेणी), चोटी।
बेनु	१–(वेणु), वंशी, बांसुरी। २–एक प्रसिद्ध राजा का नाम। राजा पृथु के पिता।
बेरे	बेड़े।
बेसर	१–खच्चर। २–स्त्री का नाक का एक आभूषण।
बेहू	छिद्र, छेद।
वैतरनी	यमपुरी की एक नदी। पापी जीव इस नदी में 'कष्ट' भोगते हैं। पीव या मल की गंदी नदी।
वैदिक	वेदपाठी।
वैदेही	सीता जी विदेह की पुत्री।
वैनतेय	गरूण जी, विनता के पुत्र। गरूण की माता का नाम विनता है।
बैना	वचन, बात।
वैभव	धन, ऐश्वर्य, सम्पदा।
वैष्णव	विष्णुभक्त।
वैखानस	वानप्रस्थ साधु।
वैस	(वयस) अवस्था, आयु।
वोहित	जहाज, नौका।
व्योम	आकाश।
वंचक	ठग, धोखेबाज।
वंचन	ठगना, धोखेबाजी।
वंदन	प्रणाम।
वंदनीय	प्रणाम के योग्य, प्रणाम्य।
वंद्य	प्रणाम के योग्य।
बधु	भाई।
व्रण	फोड़ा, घाव।
ब्रह्मगिरा	आकाशवाणी।
ब्रह्मधाम	ब्रह्मा का घर।

शब्द	अर्थ
ब्रह्मभवन	ब्रह्मा का घर।
ब्रह्मानन्द	ब्रह्म के मिलने का सुख।
व्रात	समूह।
ब्राता	समूह।
ब्रीड़ा	लज्जा।
व्यग्र	व्याकुल।
व्यजन	पंखा।
व्यजन	भोजन।
व्यथा	पीड़ा, दुःख।
व्यलीक	मिथ्या, झूठ।
व्यसनी	शौकीन, आदतवाला।
व्याज	बहाना, छल, कपट।
व्याप्य	व्याप्त होने योग्य।
व्याधि	रोग बीमारी।
व्याधु	बहेलिया।
व्याल	१–सर्प, २–हाथी।
व्याली	१–सर्पिणी, २–सर्प का मंत्र जाने वाला।
व्यास	१–विस्तार, २–एक महर्षि जिसने १८ पुराण, महाभारत, गीता तथा वेदान्त सूत्र की रचना की। इनके पिता का नाम पराशर मुनि तथा पुत्र का नाम 'शुकदेव जी' था।

(भ)

भक्तवत्सल	भक्त पर पुत्र की तरह प्रेम करने वाला।
भग	ऐश्वर्य, सौभग्य, सौन्दर्य, तेज।
भगिनि	बहिन।
भजामि	मैं भजता हूँ।
भजामहे	हम लोग भजते हैं।
भट	योद्धा।
भटमेरे	धक्का खाते फिरते हैं।
भड़िहाई	भेंड़ी की तरह नीचे मुख करके, चोर की तरह।
भणित	कहा गया। कथित।
भंदेस	गवार, भद्दी, बुरी।
भनई	कहता है।
भद्र	कल्याण, उत्तम।
भणिति	कविता।

शब्द	अर्थ
भनी	कही, कहकर।
भनु	कह।
भने	कहे।
भनन्ता	कहते हैं।
भमरि	व्याकुल होकर। घबड़ाकर।
भभरा	घबड़ाना।
भर	बोझा।
भरण	पोषण।
भरणी	१– एक नक्षत्र, २– एक चिड़िया जो सर्प को खा डालती है, ३– नेवली, नेवला की स्त्री।
भव	१– संसार, २– शिवजी, ३– उत्पत्ति।
भवमोचन	संसार से छुड़ाने वाला।
भवाम्बुनाथ	संसार–सागर के स्वामी, संसार–समुद्र।
भँवर	भौंरा, चक्कर।
भा	प्रकाश।
भान	प्रकाश, ज्ञान, प्रतीति, किरण, तेज।
भाउ	प्रेम, स्वभाव, विखर।
भाजन	पात्र।
भाथा	तरकस, बाण रखने के थैला।
भानु	सूर्य।
भांड़े	१– बर्तन, २– बिगाड़े।
भामा	स्त्री।
भामिनी	स्त्री।
भायप	भाईपना।
भारती	सरस्वती, वाणी।
भाल	मस्तक, माथा।
भावता	सोहता।
भावी	होनहार, होने वाला।
भाषा	कहा, बोली।
भिन्दिपाल	ढेल वांस। सुतरी या सन की छोटी सी खोंच, जिसमें मिट्टी का ढेला भर कर चिड़िया मारी या उड़ाई जाती है।
भीती	१– दीवर, २– भय।
भीम	भयंकर।

शब्द	अर्थ
भीरु	डरपोक, कायर।
भुजंग	सांप।
भुवाल	(भूपाल) राजा।
भुवि	(भूमि) पृथ्वी।
भूत	१– जीव, २– पिशाच।
भवदंघ्रि	आपका चरण।
भवन्त	आपका।
भवन	घर।
भीरा	बोझ, कष्ट।
भूतल	पृथ्वीतल।
भूधर	पर्वत, पहाड़।
भूदेव	ब्राह्मण।
भूसुर	ब्राह्मण।
भूरि	बहुत, अनेक।
भूति	धन, सम्पत्ति।
भूमिनाग	पृथ्वी पर के सर्प।
भूर्जतरु	भोज का वृक्ष।
भूषित	सजी हुई। भूषण युक्त।
भृकुटि	भौंह।
भृगुनाथ	परशुराम जी।
भे	हुए।
भेक	मेढक।
भेरी	बड़ नगाड़ा।
भेषज	दवाई, ओषधि।
भोगावती	सर्पों की नगरी, २– पाताल गंगा।
भोजन खानी	भोजनालय, रसोई–गृह।
भोरा	१– सबेरा, २– भोला।
भोरी	भोली, सीधी–सादी।
भोरे	भूलकर।
भौम	भूमि का पुत्र अर्थात् मंगल, मंगल ग्रह।
भंजन	नाश करने वाला।
भृंग	भौंरा।
भृंगकीट	भृंगी कीड़ा। बिलनी। एक कीड़ा जो कि दूसरे कीड़े को पकड़ ले जाता है और उसी के ऊपर बार–बार चक्कर

शब्द	अर्थ
	लगा कर, उसे अपने रंग और स्वरूप का बना लेता है। उदा० 'भइ गति भृंगकीट की नाई' आर०।
भ्रजा	सुशोभित हुआ।
भ्रू	भौंह।

(म)

मइके	माता के घर।
मकर	मगर, एक राशि का नाम।
मकर केतन	मकर ध्वज कामदेव।
मकरी	मकड़ी।
मकरन्द	फूल का रस।
मख	यज्ञ।
मग	मार्ग।
मघवा	इन्द्र।
मज्जहिं	स्नान करते हैं।
मज्ज	१– वर्षा का प्रथम जल, २– चर्बी।
मंजीर	नूपुर।
मंजु	सुन्दर।
मंजुल	सुन्दर।
मंजूषा	सन्दूक, पिटारी, बक्सा।
मत्सर	ईर्ष्या, वैर, डाह।
मद	अहंकार।
मदन	कामदेव, मद उत्पन्न करने वाला।
मधु	१– चैत का महीना, शहद
मधुकर	भौरा।
मधुप	भौंरा।
मधुपर्क	दही, मधु, घी आदि मिलाकर तैयार होता है।
मनिआर	मणिधर, १– सर्प, २– पर्वत।
मनु	ब्रह्मा के पुत्र। 'मनुस्मृति' के निर्माता।
मनुज	मनुष्य।
मनुजाद	मनुष्य को खाने वाले, राक्षस।
मनुसाई	पुरुषार्थ।
मनोज	कामदेव।
मनोहव	कामदेव।
मनोरथ	अभिलाषा।

शब्द	अर्थ
मन्मथ	कामदेव।
मनसिज	कामदेव।
मनाक	थोड़ा।
मनोरम	सुन्दर, मन को सुन्दर लगने वाला।
मय	१– सहित, २– एक राक्षस का नाम।
मयत्री	(मैत्री) मित्रता।
मयूख	किरण।
मयंक	(मृगांक), चन्द्रमा।
मरकथ	नीलमणि।
मरकट	(मर्कट), बन्दर।
मरम	(मर्म), रहस्य, छिपी बात, भेद, हृदय।
मराल	हंस।
मरु	रेगिस्तान, निर्जल स्थान।
मर्दन	मलना।
मर्मी	भेद या रहस्य जानने वाला।
मल	१– मैल, २– पाप।
मलय	१– सफेद चन्दन, २– मलय पर्वत।
मलिन	१– मैला, २– गन्दार उदास।
मष्ट	चुप, शान्ति, मौन।
मसक	मच्छर।
मसि	स्याही।
महती	बड़ी।
महागद	बड़ा रोग।
गद	रोग।
अगद	औषधि, दवा।
महामणि	श्रेष्ठ मणि, जिससे सर्प का विष उतर जाता है। उदा० ('मंत्र महामणि विषय व्याल के' बाल०)।
महामोह	बहुत बड़ा अज्ञान।
महिदेव	भूदेव, ब्राह्मण।
महिपाल	राजा।
महिषि	१– बड़ी रानी, २– भैंस।
महिषेश	महिषासुर राक्षस।
महि	पृथ्वी।
महीधर	पर्वत।

शब्द	अर्थ
महेश	शिव जी।
महिप	राजा।
महोत्सव	बड़ा उत्सव।
महोष (महोख)	एक प्रकार का पक्षी, एक कौवे के आकार का होता है, इसका रंग कथई होता है।
माजा	प्रथम वर्षा के जल का फेन। उदा० ('माजा खाइ मिन मनु व्यापा' अयो०)
माझ	मध्य, बीच।
मातलि	इन्द्र के सारथी का नाम।
मातुल	मामा।
मान	१– अहंकार, २– सम्मान।
मानष	१– मानसरोवर, २– मन या हृदय।
माणिक	(माणिक्य) जवाहर, एक रत्न।
मापा	व्याकुल।
मापी	व्याकुल हुई, मतवाली।
माया	मोह, झूठा प्रपंच, कपट।
मायापति	ईश्वर, श्री रामचन्द्र।
मायिक	माया युक्त, मिथ्या, झूठा।
मार	(स्मर) कामदेव।
मरगन	बाण, ढूंढना।
मारीच	एक राक्षस का नाम, जो कंचन मृग बनकर सीता को मोहित किया था।
मारुत	पवन, हवा, वायु।
मारुति	हनुमान जी।
मालव	मालवा देश, मारवाड़ देश, गुजरात।
माला	१– हार, २– समूह।
माखे	क्रोधित हुए, नाराज हुए।
माहुर	विष, जहर।
मां	मुझको।
मिति	मर्यादा, सीमा।
मिथिल	जनक पुरी।
मिथिलेश	जनक।
मिलित	मिला हुआ, युक्त।
मिसु	(मिस) बहाना।

शब्द	अर्थ
मुकता	(मुक्ता) मोती।
मुकुताहल	मोती।
मुकुर	दर्पण, शीशा, ऐनक।
मुकुन्द	मुक्ति को देने वाले अर्थात् कृपण।
मुखर	अधिक बोलने वाला, अगुवा, नेता।
मुखागर	दूत।
मुठभेरी	मुक्के की मार। मूकाबाजी।
मानसमूल	सरयू नदी। उदा० (मानसमूल मिली सुरसरिहिं) बाल०।
मुद	आनन्द, प्रसन्नता।
मुदित	प्रसन्न।
मुद्रिका	अंगूठी।
मुधा	मिथ्या, झूंठ।
मुनिपट	मुनियों के वस्त्र, बल्कल, पेड़ की छाल।
मुनिन्दा	(मुनीन्द्र) मुनियों में श्रेष्ठ।
मूक	गूंगा।
मूरि	जड़ी, बूटी।
मूल	जड़, कारण, हेतु।
मूलक	मूली।
मुनिवर	मूनि श्रेष्ठ।
मूषक	चूहा।
मृगपति	सिंह, मृगों का राजा।
मृगजल	मृग तृष्णा, मिथया जल, सूर्य की किरणों की चमक में बिना जल के जल का आभास।
मृगमद	कस्तूरी।
मृगया	शिकार, आखेट।
मृगराज	सिंह।
मृगाधीश	सिंह।
मृदु	कोमल।
मृणाल	कमल की दण्डी।
मृषा	झूंठ।
मेकलसुता	नर्मदा नदी।
मेखला	करधनी।
मेघडंबर	(मेघाडम्बर) बड़ा भारी छाता। बादलों का घेरा।

शब्द	अर्थ
मेचक	श्याम, काला।
मेदिनी	पृथ्वी।
मेधा	बुद्धि।
मेरु	सुमेरु पर्वत।
मेली	डाल दी।
मेघ	बादल।
मैना	पार्वती जी की माता का नाम।
मोई	१– भिगो दिया, २– मोही।
मोचन	छोड़ना।
मोद	प्रसन्नता।
मोदक	लड्डू।
मोह	अज्ञान।
मौलि	माथा, शिर।
मंगलद्रव्य	पुष्प, पल्लव, कलश आदि शुभ सूचक पदार्थ।
मंजीर	नूपुर, पायल।
मंजुल	सुन्दर।
मण्डन	सुशोभित करने वाला, भूषक।
मंडल	गोल, घेरा, समूह।
मण्डली	सभा, समूह।
मण्डलीक	सरदार, नेता, मंडली का।
मंडित	शोभित।
मंत्र	१– गुरु का उपदेश, किसी देवता की पूजा का मंत्र, २– राय, परामर्श।
मंत्रराज	राम नाम मंत्र, राम तारक मंत्र।
मंद	नीच।
मंदहार	अति नीच।
मंदर	मंदराचल पर्वत।
मंदाकिनी	१– स्वर्ग की गंगा २– चित्रकूट की गंगा को मंदाकिनी कहते हैं। उदा० ('मंदाकिनी पुनीत नहाए') अयो०।

(य)

यथा	जैसे।
यथावत्	जैसा पहले था।
यथाधित	जैसा पहले था।
यथोचित	जैसा चाहिए।

शब्द	अर्थ
यमी	नियमी, यम का पालन करने वाला।
ययाति	एक राज का नमा। राज ययाति के दो स्त्रियां थीं। एक शुक्रचार्य की पुत्री 'देवयानी' और दूसरी 'शर्मिष्ठा'। शर्मिष्ठा देवयानी की दासी और राक्षसराज वृषपर्वा की पुत्री थी। शर्मिष्ठा से प्रेम प्रसंग करने पर, देवयानी ने नाराज होकर अपने पिता शुक्राचार्य से बता दिया। शुक्राचार्य ने शाप दे दिया। राजा ययाति जवानी में ही बुड्ढे हो गए। तब अपने एक पुत्र से जवानी मांगी। अंत में भोगइच्छा पूरी करके, उस पुत्र को राज्य देकर वन में चले गए।
यश	बड़ाई।
यक्ष	कुबेर के सेवक या अनुचर।
यक्षपति	कुबेर।
यज्ञोपवीत	जनेऊ।
यातुधान	राक्षस।
याम	पहर।
यावत्	जब तक।
युग	१– चार युग, २– दो।
युवराज	राज्य का उत्तराधिकारी।
योषिता	स्त्री।
यं	जिसको।

(र)

रघुनाथ	रामचन्द्र जी।
रघुराज	रामचन्द्र जी।
रज	धूल।
रजत	चांदी।
रजक	धोबी।
रजनी	रात।
रजनीचर	राक्षस। रात में चलने वाला।
रजनीमुख	सायंकाल, प्रदोष, रात्रि का पहला प्रहर।
रजाई	आज्ञा, राजा की आज्ञा।
राजयसु	आज्ञा।
रजु	(रज्जु) रस्सी।
रतनारे	लाल, लाल रंग के।

शब्द	अर्थ
रति	१– प्रेम, २– कामदेव की स्त्री का नाम।
रथांग	चक्रवाक, चकई–चकवा। उदा० (पिक रथांग शुक सारिका, चातक हंस चकोर) अयो०।
रथी	रथ का स्वामी। रथ पर सवार।
रद	दांत।
रदपुर	ओष्ठ, होठ।
रण	युद्ध, लड़ाई।
रनिवास	रानियों के रहने का स्थान।
रवि	सूर्य।
रविनन्दिनी	यमुना नदी। ये सूर्य की पुत्री हैं।
रमन	पति, खेल।
रंभा	१– केला, २– एक अप्सरा का नाम।
रमा	लक्ष्मी।
रम्य	सुन्दर।
रवनी	(रमणी) स्त्री।
रविमणि	सूर्यकान्त मणि।
रसना	जीभ।
रसा	पृथ्वी।
रसाल	आम।
रसिक	रस का जानने वाला प्रेमी।
रहसी	१– हंसी, २–एकान्त।
रहस्य	गुप्त बात, भेद, छिपी बात।
राउत	सरदार, मुखिया।
राउर	आपका।
राऊ	राजा।
राका	पूर्णिमा की रात्रि।
राकेश	पूर्णिमा का चन्द्रमा। उदा० (जनु राकेश उदय भये तारे) बाल०।
राचा	प्रिय लगा।
राजत	सुशोभित होता है।
राजनय	राजनीति।
राजी	१– पंक्ति, २– विराजमान हुई।
राजीव	कमल।
राजे	प्रसन्न हुए।
राजेन्द्र	राजाओं में श्रेष्ठ।

शब्द	अर्थ
राता	प्रेमयुक्त हुआ।
रामायुध	धनुष–वाण, राम के धनुष–वाण ही मुख्य अस्त्र हैं।
राय	राजा।
रायमुनी	लाल नामक पक्षी। लाल रंग की पक्षी। उदा० (जनु रायमुनी तमाल पर बैठी) लंका०।
रार	रारि, झगड़ा, लड़ाई।
रासभ	गध।
राहु	एक ग्रह का नाम, जो चन्द्रमा और सूर्य को ग्रसता है।
रिपु	शत्रु, बैरी।
रिपु सूदन	शत्रुघ्न।
रीते	खाली।
रुज	रोग।
रुह	उत्पन्न, रोम।
रुंड	धड़, सिर रहित शरीर।
रुकी	सुन्दर।
रेनु	(रेणु) धूल।
रोचन	हल्दी। गोरोचन।
रोदति	रोती है।
रोमपाट	ऊनी कपड़ा, रोयेंदार कपड़ा।
रोहिणी	चन्द्रमा की स्त्री।
रोहू	मछली की एक जाति।
रौताई	सरदारी, प्रधानत्व, अगुवाई।
रंगभूमि	धनुषयज्ञ की भूमि।
रंजन	प्रसन्न करना।
रन्तिदेव	एक राजा का नाम। ये बड़े धार्मिक तथा दानी थे। सात दिन तक निराहार व्रत थे। आठवें दिन पारायण करने चले, तब ईश्वर ने ब्राह्मण का रूप धारण करके कहा–राजन्! मैं आठ दिन से भूखा हूँ। तब इन्होंने भोजन की पूरी थाली दे दिया। भगवान् प्रसन्न हो गए। इन्हें सशरीर स्वर्ग प्राप्ति हुई।

(ल)

लकुट	लकड़ी, लाठी।
लघुता	हल्कापन, नींचपन।
लक्ष	१– लक्ष्य, निशान, २– एक लाख।

शब्द	अर्थ
लच्छि	लक्ष्मी जी।
लटत	गिरता है।
लय	१– तल्लीन, २– राग।
ललना	स्त्री।
ललाम	सुन्दर।
ललित	सुन्दर।
लव	१– समय का छोटा अंश, पल, २– राम के पुत्र।
लवन	(लवण) नमक।
लवा	लावा पक्षी, एक छोटी चिड़िया।
लवाई	नई व्यायी।
लसत	शोभित। लाघव शीघ्र, बिना श्रम।
लाजा	१– लज्जा, २– लावा।
लालसा	इच्छा।
लाली	१– प्यार किया, दुलारी। २– लाल रंग।
लावक	लवा पक्षी।
लावण्य	सौन्दर्य।
लाहु	लाभ।
लिलार	माथा, मस्तक।
लीका	मर्यादा, लकीर।
लुठत	जोटता हुआ।
लुब्धक	१– लोभी, २– बहेलिया, शिकारी।
लूक	१– डल्का, २– गर्म हवा।
लेखा	रेखा, हिसाब।
लेश	थोड़ा।
लवलेश	थोड़ा।
लोई	लोग।
लोकप	लोकवाल।
लोना	सुन्दर।
लोयनि	आँख।
लोनाई	सुन्दरता।
लोल	चंचल।
लोलुप	लालची, लोभी।
लोवा	लोमड़ी।

नोट :– व तथा ब साथ ही लिशा गया है।

शब्द	अर्थ

(श)

शक्र	इन्द्र।
शची	इन्द्राणी।
शमन	नाश करने वाल, शान्ति।
शसा	शश, खरगोश।
शशक	खरगोश।
शशि	चन्द्रमा।
शशिधर	खरगोश।
शाकवणिक	साग बेंचने वाला। शाक–विक्रेता।
शठ	दुष्ट, नीच।
शाखामृग	बन्दर।
शाखोच्चार	वेद की शाखाओं का कथन। कुल की शाखाओं का वर्णन।
शालि होत्र	अश्व शास्त्र। वह शास्त्र जिसमें घोड़ों की जातियों तथा गुणों का वर्णन है।
शिशिर	माघ–फाल्गुन की ऋतु।
शिल्प	१– कारीगरी, २– कलापक्ष।
शिल्पकर्म	कारीगरी का काम।
शाल	दुःख।
शालक	दुःख देने वाला।
शिविका	पालकी।
शिंशुपा	शीशम का पेड़ा।
शिश्न	लिंग। मूत्रेन्द्रिय।
श्रगाल	सियार।
शुक	१– तोता, २– शुकदेव जी।
शुक	१– तोता, २– शुकदेव जी।
शुक्र	१– वीर्य, २– शुक्राचार्य जी।
शुचि	पवित्र।
शुभ	मंगल, अच्छा।
शुभ्र	सफेद, स्वच्छ।
शूल	१– दुःख, पीड़ा, २– त्रिशूल।
शैल	पर्वत।
शैलजा	गिरिजा, पार्वती जी, पर्वत की पुत्री।
शैलराज	पर्वतराज हिमालय।

शब्द	अर्थ
शोणित	रक्त, खून।
शौच	पवित्रता।
शं	कल्याण।
श्रृंग	१– पहाड़ की चोटी, २– सींग।
श्रमबिन्दु	पसीना, पसीने की बूंद।
श्रमित	थका हुआ।
श्रवण	कान।
श्री	१– लक्ष्मी जी, जानकी जी, २– शोभा, ३– धन।
श्रीपति	लक्ष्मी पति, विष्णु भगवान।
श्रीफल	नारियल।
श्रीवत्स	लक्ष्मी का चिन्ह, जो विष्णु के बांयी ओर हृदय पर स्थित है।
श्रीरंग	विष्णु जी, लक्ष्मी पति।
श्रुति	१– कान, २– वेद।
श्रुवा	हवन करने का पात्र।
श्रेनी	(श्रेणी) पंक्ति समूह।
स्वपच	चाण्डाल, कुत्ता खाने वाला।

(स)

सकरुण	दया युक्त दयालु।
सकल	सब।
सकाना	डरना।
सगरे	सब।
सचान	बाजपक्षी।
सचिव	मंत्री।
सचु	सुख।
सजनी	सखी।
सजीवन	१– जलयुक्त, २– संजीवनी लता।
सह	(शह) मूर्ख, नीच, दुष्ट।
सतपंच	पांच सौ (सात पांच) सात सौ पांच।
सतरूपा	स्वयं भू, मनु की स्त्री,
सती	१– पवित्रता, २– शिव की स्त्री।
सत्यलोक	ब्रह्मलोक।
सदन	घर।
सदय	दयायुक्त।

शब्द	अर्थ
सदाचार	श्रेष्ठ आचरण।
संनकादिक	सनक, सनातन, सनत्कुमार, सनन्दन–ब्रह्मा के चार पुत्र।
सनकोर	संकेत किया, ईशारा किया।
सनाथ	स्वामी सहित, समर्थ।
सनाह	कवच, बख्तर।
सपक्ष	पंखा सहित।
सपदि	शीघ्र, जल्दी।
सद्य	शीघ्र।
समदर्शी	बराबर देखने वाला।
समर्पे	सौवें।
सम्यक	भलीभांति, अच्छी तरह।
समागत	आए, आया हुआ।
समाधि	सुख, प्राणों को रोकना।
समिध	यज्ञ की लकड़ी, पूजा की लकड़ी।
समीर	पवन, हवा।
समीहा	इच्छा।
समहानि	सामने हुई, सम्मुख हुई।
सरपि	(सर्पी), घी।
सरवरि	बराबरी, समता।
सरस	प्रेमयुक्त, रसयुक्त।
सरसइ	सरस्वती।
सरसीरूह	कमल।
सरासन	(शरासन) धनुष।
सरासुर	वाणासुर।
सरि	नदी।
सरित	नदी।
सरुज	रोगी, रोग युक्त।
सरोज	कमल।
सरोरुह	कमल।
सरसिज	कमल।
समास	संक्षेप।
सलभ	(शलभ), पतिंगा, पांखी।
सलिल	जल।

शब्द	अर्थ
सलोक	(श्लोक), यश, पुण्य।
सलोने	सुन्दर।
सबीज	बीच के सहित।
सह	साथ सहित, समेत।
सहभागिनी	सती जो स्त्री पति के साथ चिता पर जले।
सहज	१– स्वाभिक, २– सरल।
सहनि	सेनापति।
सहम	डर, भय, संकोच।
सहरोषा	क्रोध सहित।
सहसानन	हजार मुख वाले शेषनाग।
सहेली	सखी।
साउज	मृगादि वन जन्तु।
सागर	समुद्र।
साज	श्रृंगार।
सहोदर	सगेभाई, एक माता के पेट से जन्में।
सहोदरा	सगी बहिन।
सांई	स्वामी, ईश्वर।
साउज	मृगादि जीव।
साढ़े साती	शनिश्चर की दशा, जो साढ़ेसात वर्ष तक रहती है। इसमें अति कष्ट उठाना पड़ता है।
साथरी	बिछौना।
साखा	डार।
साधन	उपाय।
साधक	साधना करने वाला।
सायक	बाण।
सायुज्य	सशरीर मुक्ति।
सारद	सरस्वती।
शारदी	शरद ऋतु में होने वाली।
सारस	एक पक्षी का नाम।
सारंग	धनुष।
सालक	चुभने वाला, दुःखदायी।
शावक	पशु–पक्षियों का बच्चा।
शास्वत	सदा रहने वाला, अमर।
सिक्ता	बालू, रेत।

शब्द	अर्थ
शिखिनी	मोरनी।
शिखी	मोर।
सित	सफेद, श्वेत।
शिथिल	ढीला, थका हुआ।
सिमटे	इकट्ठे हुए।
सियरे	शीतल।
सिरानी	फुरसत हुयी।
सिरजा	बनाया रचा।
शिलीमुख	१– वाण, २– भौंरा।
सीकर	बूंद।
सीदति	दुःखी होते हैं।
सान	सांड़, धार।
सुकृत	पुण्य।
सुकृति	पुण्यात्मा।
सुकेतु	ताड़का राक्षसी का पिता।
सुकण्ठ	सुग्रीव।
सुखमा	(सुष्मा), शोभा।
सुक्र	(शुक्र), वीर्य।
सुघटित	अच्छा बना हुआ।
सुचिंचित	अच्छी तरह सोचा गया।
सुजान	चतुर।
सुधा	अमृत।
सुधाकर	चन्द्रमा।
सुनयना	जनक जी की स्त्री, सुन्दर नेत्रों वाली।
सुनासीर	इन्द्र।
सुपास	सुख।
सुमृति	(स्मृति), धर्मशास्त्र।
सुरभि	१– गाय, २– सुगन्ध।
सुरमणि	चिन्तामणि।
सुरसेनप	देवताओं के सेनापति, कार्तिकेय।
सुरसर	मानसरोवर।
सुखीथी	देवमार्ग, देवताओं का मार्ग।
सुरा	मदिरां
सुरुचि	अच्छी रूचि।

शब्द	अर्थ
सुरसरि	गंगा जी।
सुराई	वीरता।
सुलभ्य	सरलता से मिलने योग्य।
सुवन	पुत्र।
सुवास	सुगन्ध।
सुवासिनी	१– सुहागिन स्त्री २– सुगन्धित।
सूकरखेत	बाराह क्षेत्र।
सुवेल	समुद्र का तट या किनारा, एक पर्वत का नाम।
सूचक	बताने वाला, द्योतक।
सुत्रधार	१– कठपुतली नचाने वाला, २– नाटक का प्रारम्भकर्त्ता पात्र, किसी कार्य का आरम्भकर्त्ता।
सुपकार	रसोई बनाने वाला, भोजन परसने वाला।
सूप	१– दाल, २– अन्न साफ करने का एक पात्र।
सुपोदन	दाल–भात।
सुवारा	सूपकार, रसोई बनाने या भोजन परसने वाला।
सेतु	पुल।
सेनप	सेनापति।
सेला	शेला, बरछी, भाला।
शेष	(शेष) १– शेषनाग, २– बांकी, बचा हुआ।
सोधा	(शोधा), शुद्ध किया।
सोधेण	खोजा, शोध किया।
सोन	१– स्वर्ण, २– सोन नदी, ३– लाल।
सोपान	सीढ़ी, क्रम।
सुभग	सुन्दर।
सोपि	(सोडपि) वह भी।
सोम	चन्द्रमा।
सोहमस्मि	(सःअहम् अस्मि,) वही हूं मैं।
सौध	राजमहल।
सोमित्र	सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न।
सीव	सीमा।
सुन्दरी	स्त्री।
स्मरामहे	हम लोग स्मरण करते हैं।
श्यामल	सांवल, श्याम, काला।
श्यामा	(श्यामा) १– एक पक्षी का नाम, २– सोलह वर्ष की सुन्दर स्त्री।

शब्द	अर्थ
स्यन्दन	रथ।
सृजत	बनाता है।
स्व	अपना।
स्वपच	(स्वपच) चाण्डाल।
स्वयंभूमनु	१– एक राज का नाम, जिससे मनुष्यों की उत्पत्ति हुई है, २– अपने आप उत्पन्न होने वाले मनु।
स्वल्प	थोड़ा, बहुत थोड़ा।
स्वाति	एक नक्षत्र का नाम।
स्वान	(श्वान) कुत्ता।
स्वेद	पसीना।
स्वास्थ	(स्वार्थ) अपना मतलब।
सौरभ	सुगन्धि, आम का वृक्ष।
सौरज	(शौर्य) वीरता।
संकाश	समान, प्रकाश। उदा० (तुषाराद्रि संकाश गौरंगभारम) (उत्तर)।
संकुल	पूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त।
संघट	मेल, संयोग।
संघर्षा	रगड़ा।
संघात	१– मेल, २– चोट।
संयम	नियम, नियंत्रण।
संजात	उत्तम।
संयुग	संग्राम, युद्ध।
संयोग	मेल, मिलाप।
संतति	सदा, हमेशा, निरन्तर।
संदोह	समूह, ढेर।
संघाते	चढ़ाये, निशाने पर लगाए।
संपुट	१– हाथ जोड़कर, दोना २– दो चौपाईयों के दोहे को दोहराना।
संभव	होना।
संभावित	१– होने वाला, २– प्रतिष्ठित, सम्मानित। उदा० (संभावित कह अपयश लाहू कोटि मरन सम दारुन दाहु)।
संभूत	उत्पन्न हुआ, जन्म हुआ।
सम्मत	राय, सलाह।
संवत	वर्ष।

शब्द	अर्थ
संबल	१– सहारा, २– मार्ग का व्यय, पाथेय।
संबुक	घोंघा, एक राक्षस का नाम। उदा० (सम्मुक भेंक सिवार समाना) बाल०।
संसर्ग	साथ–साथ (मेल)।
संसृति	संसार, सृष्टि।
सिंघल	लंका के समीप एक द्वीप।
सिंधु	समुद्र।
सिंधुर	हाथी।
सिंधुरवदन	गजानन, गणेश जी।

(ह)

हई	हवा, नाश किया।
हकराना	बुलवाना।
हट्ट	बाजार, दुकान।
हनत	मारता है।
हनू	ठोडी, दाढ़ी का नोक।
हने	१– मारे, २– बाजे।
हयगृह	अश्वशाला, घोड़सार।
हर	१– शिव, २– हर ले जाने वाला।
हरिगिरि	कैलाश पर्वत।
हरद	(ह्रद) १– गहरा जलाशय, २– हल्दी।
हराषु	कष्ट, दुःख, ज्वर।
हरि	१– विष्णु, २– सिंह, ३– वानर।
हरियान	विष्णु की सवारी, गरुण।
हरित	१– हरा रंग, २– चुराया गया।
हरु	१– हल्का, २– चुरा लो, हरण कर लो।
हलधर	बलदेव जी।
हवि	खीर।
हस्त	हांथ।
हहरि	व्याकुल होकर, घबड़ाकर।
हा	खेद सूचक शब्द।
हाटक	स्वर्ण, सोना।
हिम	पाला, बर्फ।
हिमोपला	पत्थर, ओला।
हिमकर	चन्द्रमा।

शब्द	अर्थ
हिय	हृदय।
हिसिका	१– बराबरी, २– ईर्ष्या।
हृदयेशा	अन्तर्यामी।
हुनर	गुण, चतुरता।
हुतो	हवन किया, होम किया।
हुलसी	१– तुलसीदास जी की माता का नाम। २– प्रसन्न हुई।
हुलासू	आनंद।
हेति	१– अस्त्र, २– व्यवहारी।
हेतु	कारण, प्रेम।
हेम	स्वर्ण।
हेरि	देख कर, खोज कर।
हेला	खेल।
हंकारी	बुलाकर।
हाती	नाश किया।
हिंस	हिन हिनाना, घोड़े का शब्द।
हीचैं	१– दबे, २– खींचना।
ह्रद	जलाशय, तालाब।

(क्ष)

क्षय	नाश।
क्षत	घाव, चोट।
क्षतज	रक्त, खून, लाल।
क्षात्रधर्म	क्षत्रिय का धर्म।
क्षुद्र	छोटा।
क्षुधित	भूंखा।
क्षुधा	भूंख।
क्षेम	कल्याण, हित।
क्षेत्र	खेत।
क्षोभा	दुःख, घबड़ाना।

(ज्ञ)

ज्ञात	मालूम।
ज्ञाति	जाति।
ज्ञापक	ज्ञान देने वाला।
ज्ञेय	जानने योग्य।

———————

सम्पादक का जीवन-वृत्त

इलाहाबाद जनपद के कोटवा ग्राम में 6 अगस्त 1935 ई० में आपका जन्म हुआ। स्थानीय जमुनीपुर ग्राम में स्थित मोतीलाल नेहरु इण्टरमीडिएट कालेज में हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् इलाहाबाद नगर में 'सिटी इण्टरमीडिएट कालेज इलाहाबाद' से इण्टर उत्तीर्ण किया। तदनन्तर प्रयाग विश्व–विद्यालय इलाहाबाद से बी० ए० एवं हिन्दी विषय लेकर एम० एम० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आगरा विश्व–विद्यालय से 'संस्कृत' में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही के० पी० प्रशिक्षण महाविद्यालय से एल० टी० किया।

इसके पश्चात् ग्रामीण मोतीलाल नेहरु इण्टरमीडिएट कालेज जमुनीपुर इलाहाबाद में अध्यापन कार्य आरम्भ किया। 25 वर्षों तक इस कालेज में हिन्दी के प्रवक्ता पद पर कार्यरत रहे। सम्प्रति मोतीलाल नेहरु इण्टरमीडिएट कालेज जमुनीपुर, इलाहाबाद में प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत रहे।

आप में हिन्दी साहित्य के प्रति असीम श्रद्धा एवं सेवा भावना है। आपने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का निष्ठा पूर्वक सम्पादन किया, जिनमें "विजयपर्व" का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आपने चार–पाँच रचनायें लिखी हैं। जो संयोग से या समय की प्रतिकूलता के कारण अभी अप्रकाशित हैं। रचनाओं के नाम निमस्थ हैं :–

1. "साठोत्तरी कथा साहित्य में मानव–मूल्य की अवधारणायें।"
2. "नरेश मेहता के उपन्यासों का एक संक्षिप्त अध्ययन।"
3. "नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में सांस्कृतिक बोध"
4. "झाँसी की विरांगना रानी" (खण्डकाव्य)
5. "शीशे और हथौड़े" (उपन्यास)
6. "पौराणिक कथा–कोश" (दो भाग)

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO 104497
DATE 27-3-02

—प्रकाशक

Library IIAS, Shimla
R 413 Si 64 M
00104497